विचित्र ससुराल मोनिका श्रीवास्तव आत्म जीवनी

मेरा नाम मोनिका श्रीवासतव है, मेरी उम्र २५ साल है. अनुवांशिक गुण होने के कारण मेरा बदन कुछ ज्यादा ही भरा हुआ है. स्तन और चुत्तड़ कुछ ज्यादा ही बड़े हैं. मेरे मोहल्ले के ज्यादर लड़के मुझ पर बुरी नजर रखते थे पर मैने किसी को कुछ ज्यादा भाव नही दिया. मेरी बुआ की शादी जहां हुई थी उनके मोहल्ले में एक श्रीवासतव फैमली रहती है, मेरी बुआ को फैमली अच्छी लगी तो मेरी वहां बात चली और कुछ ही दिनो में मेरी शादी हो गई. मेरे ससुराल वालो ने बहुत कम दहेज लिया जिस्से उनकी इज्जत मेरी फैमली में काफी बढ़ गई.

मेरे ससुराल में कुल मिला कर ७ लोग थे. मेरे ससुर एक आयुर्वेदिक डाक्टर थे, ज्यादातर घर के पास अपने क्लिनिक में बैठते है. सास घर पर ही रहती थी और घर के काम देखती है. मेरे पति के दो बड़े भाई हैं, और दो बड़ी बहने, ये सबसे छोटे है घर मे. सबसे बड़े जेठ जी बिजनेस चलाते है और सुबह ९ बजे से रात के ९ बजे तक अपने दुकान में बैठते है. उनकी पत्नी एक सरकारी स्कूल मे टीचर है और ११ से ४ स्कूल में रहती है. उससे छोटे वाले भाई नौकरी करते है और १० से ५ ड्यूटी में रहते है. उनकी पत्नी घर का काम करती है, घर मे सबसे सुंदर है, तीखे नाक नक्श, औसत शरीर, गोरा रंग, लम्बा कद. उसके बाद मेरी दो ननंद है. दोनो की शादी उसी शहर में हुई है, इसलिए दोनो ननंद और दोनो नन्दोई का घर मे आना जाना लगा ही रहता है. मेरे पति बड़े भाई के साथ बिजनेस ही देखते है, पर बाहर का काम जैसे माल लाना, पेमन्ट पहुंचाना, पार्टी से मिर्टींग आदि काम करते है. असल मे सबसे ज्यादा पढ़े लिखे है इसलिए. घर मे काम करने के लिए नौकर चाकर तो है. पर घर का नियम है कि खाना बहुऐं ही बनाऐंगी.

शादी के बाद दो चार दिन तो ऐसे ही निकल गये. मेहमानो का आना जाना लगा ही रहा, मुझको लेकर कई लोगो ने कमेन्टस किया कि जैसा मेरा फिगर है उस हिसाब से मेरे पति बहुत ऐश करेंगे. इनके दोस्तो ने भी ऐसे ही कमेन्टस किये. इनके यहां नियम है कि शादी के तीसरे रात ही सुहाग रात होती है. उससे पहले पति पत्नी अगल ही रहते है. तीसरे दिन मेहमानो का आना बंद हो गया और शाम को मैं तैयार होकर कमरे में बैठ गई. तभी कमरे कि सफाई करने के लिए नौकरानी आई. उसने झाड़ू पोछा किया फिर मुझसे बात करने लगी. उसने मेरी तारीफ की, कि मै बहुत अच्छी दिखती हूं और फिर पुछा, "मेमसाब, आपका घर बहुत गरीब है क्या?" मैने कहा, "नही, क्यो?" उसने कहा, "तो किस मजबूरी में आपने ऐसे घर मे शादी की है?" मैने उससे पुछा कि वो ऐसा क्यों बोल रही है. तो उसने कहा, "पुरे

मोहल्ले मे इस घर के चर्चे हैं, लोग कहते है की आपके पति का अपने मंझले भाई कि पत्नी से सम्बंध है. आपकी बड़ी जेठानी के भी बाहर दो तीन लोग हैं जिनसे उनके सम्बंध है. आपकी बड़ी ननंद की जब शादी हुई थी तो वो शादी से पहले ही पेट से थी, और छोटी ननंद कालेज टाईम में तीन लड़को के साथ होटल के कमरे में पकड़ाई थी. आपके दोनो नन्दोई आपकी छोटी जेठानी पर बुरी नजर रखते हैं इसलिए आपके घर इतना आते हैं. आपके ससुर का चाल चलन भी ज्यादा ठीक नही है." मैने उससे कहा कि इसी मोहल्ले मे मेरी बुआ भी रहती है. अगर ऐसा कुछ रहता तो वो बताती नही. मैने अपनी बुआ का नाम बताया तो उसने कहा, "माफ करना मेमसाब, आपकी बुआ है तो कहना नही चाहिए, वकील हैं पर उनका चाल चलन भी कुछ ज्यादा अच्छा नही है, उनके पति कि चलती नही है और वो अपनी मनमानी करती रहती है. सुना है कि उनके भी बाहर लड़को से नाजायज सम्बंध है." मै कुछ नही बोली बस हंस दी. उसने कहा, "मेमसाब आपको यकीन नही हो रहा है न, ठीक है आपको खुद ही पता चल जायेगा." मैने उसे १०० का नोट दिया और उसने धन्यवाद कह कर निकल गई.

मैं रात होने का इतिजार करने लगी. रात को १० बजे मेरे पति आये, पुरे नशे में धुत, आते ही बिस्तर पर लेट गये. मुझसे बोले, "मेरे घर के नियम बहुत कड़े है, कुछ भी हो जाऐ, घर की एकता नही टूटनी चाहिए. मेरा तेरे में कोई इंट्रेस्ट नही है, मै अपनी छोटी भाभी से प्यार करता हूं." मुझे उनकी बातो से धक्का सा लगा, मैने धीरे से पुछा, "तो मुझसे शादी क्यो की?" उन्होने अपने ही धुन मे कहा, "मै नही करना चाहता था, मेरे घर वालो ने और तेरी बुआ ने जबरदस्ती करवाई है. तु डर मत, यहां सब आराम मिलेगा, घर वालो कि आदेश का पालन करना, और मेरी मम्मी की हर बात मानना, बस मुझसे कोई उमीद मत रखना." इतना कह कर वो सो गये. मुझे अब नौकरानी की बात समझ आई थी. मेरे परिवार वाले मेरी शादी को लेकर बहुत परेशान थे और मेरी बुआ की बहुत इज्जत थी तो मैने सोचा कि घर मे बताऊंगी तो कलेश होगा इसलिए चुप रहने मे ही भलाई समझी.

शादी के १५ दिन बाद ही मेरी सास ने मुझे चुल्हे चौके मे झोंक दिया, भाभीयो की मदद से काम चलता था. मेरे पति ज्यादातर घर से बाहर रहते थे. और कमरे में भी देर रात को ही आते थे. छोटे जेठ जी रमाकांत शाम को ५ बजे पहुंच जाते है और फिर घर में ही रहते है. एक दिन मैं दोपहर में सो रही थी, शाम हुई तो उठी, कपड़े मुड़ गये थे तो सोचा कि कपड़े बदल लूं. कपड़े बदलने के लिए मैने सारे कपड़े उतार दिये, क्योकि कमरे मे अकेली थी और दरवाजा बंद था इसलिए टावेल नही ली थी. जब कपड़े पहन रही थी तो लगा कि शायद खिड़की से कोई कोई झांक रहा है. मैने चोर नजरो से उधर देखा तो खिड़की अधखुली थी पर कोई दिख नही रहा था. मैने जल्दी जल्दी कपड़े पहने और झट पट दरवाजा खोल कर बाहर निकली. बाहर आई तो देखा कि रमाकांत जी आ रहे थे, मुझे देख कर चाय बनाने को बोल कर जाने लगे. मैने उनसे पुछा कि क्या उन्होने यहां से किसी को जाते देखा है तो उन्होने नही कहा. मुझे भी

लगा कि शायद ये मेरा वहम हो सकता है इसलिए मामले को तूल नही दी. पर लगातार एक हफ्ते तक जब भी कपड़े बदलती थी तो ऐसा लगता था कि शायद कोई झांक रहा है पर कभी किसी को देख नही पाई. फिर भी सावधानी के लिए ओट मे कपड़े बदलने लगी.

एक दिन शाम को अचानक मेरे पति जल्दी आ गये. वो पिछे वाले आंगन में जा कर बैठ गये. छोटी जेठानी भी वही बैठी थी कुर्सी पर और वो बगल में जा कर बैठ गये. मै उठ कर कमरे मे आ गई, काफी देर बाद मैने सोचा कि पुछ लूं कि चाय पीयेंगे या नही. ये सोच कर उठी और आंगन की तरफ चल दी. जैसे ही आंगन मे पहुंची तो देख कर धक्का लगा, फौरन अपने आप को ओट मे लेकर मैने आंगन मे झांका. मेरी छोटी जेठानी कुर्सी के बगल में खड़ी थी, मेरे पति ने उनके ब्लाऊज के सारे बटन खोल दिये थे और उनके पीछे खड़े थे. वो अपने दोनो हाथो से उनके नग्न स्तनो से खेल रहे थे. छोटी जेठानी जी ने ब्रा नही पहन रखी थी और कोई प्रतिरोध भी नही कर रही थी. बल्कि उनके चेहरे से पता चल रहा था कि वो भी काफी मजा ले रही थी. अचानक दुसरे दरवाजे से रमाकांत जी आंगन मे आ गये. मुझे लगा कि आज तो अच्छा खासा बवाल होगा. वो कुर्सी तक गये पर न तो मेरे पति ने न छोटी जेठानी जी ने कुछ प्रतिक्रिया की न रमाकांत जी ने. मेरे पति छोटी जेठानी जी के स्तनो से खेलने में व्यस्त थे. रमाकांत जी ने न्यूज पेपर उठाया और बाहर की तरफ चल दिये. मुझे ताजुब हुआ कि अपनी पत्नी को इस हालत में देख कर भी कुछ नही बोले. मैने भी रुकना ठीक नही समझा और कमरे में आ गई. ये पहला और आखरी मौका था जब मैने अपने पति को छोटी जेठानी के साथ ऐसा कुछ करते देखा था.

एक हफ्ते बाद मै नहाने के लिए बाथरूम मे गई. सारे कपड़े उतार कर नहा रही थी तो ऐसा लगा कि गेट पर शायद कोई है. मैने गुस्से मे टावेल लपेटा और दरवाजा खोल कर बाहर झांकी तो रमाकांत जी को खड़ा पाया. मुझे देख कर बोले, "अच्छा तुम नहा रही हो, मैने सोचा कि कौन इस टाईम नहा रहा है." मैने झिझकते हुए कहा, "कुछ काम है." उन्होने कहा, "हां, मुझे बाहर जाना था, तो मुझे भी नहाना था, थोड़ा जल्दी निकलना." इतना वोल कर वो मुड़े और चले गये. मै जल्दी जल्दी नहा कर बाहर आ गई. अगले दिन नहाने गई तो कुंडी लगाना भुल गई. जब सारे कपड़े उतार कर नहा रही थी तो अचानक रमाकांत जी अंदर आ गये. मै पूरी तरह से निर्वस्त्र थी, जल्दी से टावेल लेकर खुद को लपेटा. रमाकांत जी ने गुस्से मे कहा कि दरवाजा तो बंद कर लेना चाहिए और बाहर निकल गये. मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ और मैने दरवाजा बंद कर लिया. एक हफ्ते बाद एक दिन जब नहाने पहुंची तो देखा कि कुंडी टूट गई है. मैने पहले सोचा कि जा कर किसी को बताऊं फिर सोचा कि घर मे कोई है तो नही तो नहा लेती हूं फिर बता दुंगी. ये सोच कर मैने कपड़े उतारे और नहाने लगी. जैसे ही नहा कर पलटी

अचानक दरवाजा खुला और रमाकांत जी अंदर आ गये. मैने झटपट टावेल खींच कर लपेट लिया. रमाकांत जी ने गुस्से मे कहा, "तुम आज फिर दरवाजा खोल कर नहा रही हो." मैने झिझकते हुए कहा, "दरवाजे की कुंडी टूट गई है." उन्होने कुंडी की तरफ देखा और कहा, "ठीक है कल बनवा दुंगा, पर टावेल अगर दरवाजे पर लटका देती तो पता चल जाता कि कोई नहा रहा है." मैने सर हिला दिया और वो बाहर निकल गये.

दुसरे दिन सुबह उठने मे लेट हो गया तो नहा नही पाई. दोपहर मे जब सोने जा रही थी तो मां जी ने कहा कि मंदिर मे पूजा है, वो मंदिर जा रही है और मै भी मंदिर चलूं. मैने धीरे से कहा कि मैं नहाई नही हूं. मां जी ने गुस्से मे घुरा और कहा कि सब कोई मंदिर जा चुके है और मैं भी जल्दी से नहा कर तैयार हो जाऊं वो किसी को लेने भेज देंगी. मै चुपचाप टावेल ले कर बाथरूम चली है. मैने देखा कि कुंडी अभी भी टूटी हुई है तो मैने इस बार टावेल दरवाजे पर लटका दिया और नहाने लगी. जैसे ही नहा कर मुड़ी अचानक दरवाजा खुला और रमाकांत जी अंदर आ गये. मैने झटपट टावेल खींचने के लिए हाथ बढ़ाया तो देखा कि टावेल नदारद है. रमाकांत जी ने मुझे उपर से निचे तक देखा, मैने एक क्षण मे निर्णय लिया और अपने हाथो को अपने स्तनो पर ले लिया, बस ये भूल गई की निचे भी कुछ नही पहनी हूं. पर अगर हाथ निचे ले जाती तो उपर दिखता और उपर रखूं तो निचे दिखता. मैने उपर ही रखा. रमाकांत जी धीरे से बड़बड़ाए, "तुम नही सुधरोगी." मै तो शर्म से कुछ बोल ही नही पा रही थी. वो खुद ही बोले, "मुझे मुंह धोना था बस." बिना मुझसे कुछ पुछे उन्होने मग लिया और मुंह धोने लगे. मुंह धो कर उन्होने मुह रूमाल से पोछा और मुझे देखते हुए बोले, "और सब ठीक चल रहा है न, हमारे घर मे कोई परेशानी तो नही है." मैने सर झुका कर कहा, "नही." उन्होने फिर कहा, "कृष्णकांत हर जरूरत का ध्यान तो रखता है न." मैने सर हिला दिया तो उन्होने फिर कहा, "पता नही कमीना रसीले तने को छोड़ कर पतले बांस के पीछे क्यो भागता है. शायद चमड़ी के रंग के कारण. दिन रात की सब जरूरते पुरी करता है न." मैने सर हिला दिया. उन्होने थोड़े गुस्से मे कहा, "क्यो झुठ बोलती हो, अपनी रात की जरूरते तो वो स्मिता (छोटी जेठानी जी) के साथ पुरा करता है. उसकी जरूरते तो पुरी हो जाती है, मेरी नही हो पाती." मैने पहली बार नजर उठा कर उनको देखा वो मेरे चुत की तरफ देख रहे थे तो मेरी नजरे खुद ही झुक गई. उन्होने आगे कहा, "अगर रात मे तुम्हारे पास आता तो ये बाल साफ नही कर देती तुम. हफ्तो से नही कटवाई हो शायद." शर्म लाज छोड़ कर बोले जा रहे थे. मैं शर्म से गड़ी जा रही थी. आखिर वो बाहर निकले और मै कमरे मे भागी. जब तक तैयार हो कर बाहर आई तब तक मां आ गई भी. उन्होने कहा कि पूजा जल्दी खत्म हो गई थी. मै वापस कमरे मे आ गई.

दो दिन बाद होली थी, होलिका दहन के दिन मेरे दोनो नंदोई जिनका नाम राजेश और मकरन था मेरी ननंद के साथ घर आये थे. शाम को चाय पर सब साथ बैठे थे. मुझे भी मां ने बुलवाया और एक सोफे पर मै बैठ गई. राजेश और मकरन जो सामने बैठे थे उनसे मेरा परिचय कराया गया, थोड़े देर हंसी मजाक चलता रहा और फिर राजेश और मकरन उठ कर मेरे अगल बगल आ कर बैठ गये. वो दोनो इतने चिपक कर बैठे थे कि मेरी जांघे उनकी जांघो से रगड़ रही थी. दोनो फूहड़ से मजाक करने लगे. मुझे अजीब लग रहा था पर न तो मेरे पति कुछ बोल रहे थे न मेरे सास ससुर न ही उनकी पत्निया कुछ बोल रही थी. मै कुछ देर तक बर्दाशत करती रही फिर तबीयत का बहाना करके अंदर आ गई. रात को होलिका दहन हुआ और दूसरे दिन मै सुबह ही नहा कर तैयार हो गई. मै आंगन मे टहल रही थी कि अचानक राजेश और मकरन आ गये. रंग की थाली एक तरफ रख कर मेरी तरफ बढ़े. मुझसे कहने लगे की रंग लगाना है. मैने कहा कि लगा दीजिए. राजेश ने कहा, "पहले देख तो लें कि कहां कहां लगाना है." मैने पुछा, "मतलब?" राजेश और मकरन ने मेरे दोनो हाथ एक एक हाथ से पकड़ा और मेरी साड़ी का आंचल खीच कर जमीन पर गिरा दिये. मै अचकचा गई तो वो दोनो मेरे ब्लाऊज का बटन खोलने लगे. मैने गुस्से मे चिल्ला कर कहा, "छोड़िये मुझे!" आवाज बहुत ऊंची थी और बड़ी जेठानी जी हड़बड़ी मे आंगन मे आ गई. राजेश और मकरन अभी भी मेरे ब्लाऊज के बटन खोल रहे थे. वो आ के सामने खड़ी हुई पर राजेश और मकरन मेरे बटन खोले जा रहे थे. उन्होने मुझसे पुछा कि क्या हुआ. मैने धीरे से कहा कि ये दोनो मेरे ब्लाऊज के बटन खोल रहे है. उन्होने दोनो को मुस्कुरा कर देखा तो दोनो मुस्कुराने लगे. उन्होने मुझसे कहा, "देखो मोनिका, हमारे यहां घर के दमाद घर की बहुओ के साथ जैसे चाहें होली खेल सकते है, और तुम फिक्र मत करो, सिर्फ इधर उधर देखेंगे बस, कुछ करेंगे नही. बाकि का प्रोग्राम तो स्मिता के साथ चलेगा. और तुम अब मत चिल्लाना वरना तुम्हारे लिए ठीक नही होगा." इतना बोल कर वो वापस चली गई. राजेश और मकरन ने मेरे सारे बटन खोल दिये थे और मेरी ब्लाऊज के दोनो पट खोल कर मेरे एक एक स्तन से खेलने लगे. इतने मे मेरे पति आ गये, वो हम तक आए तो मै डर से और शर्म से पानी पानी हुई जा रही थी. वो सामने आये और दोनो से बोले, "होली खेल कर अड्डे पर आना, मस्त इंतिजाम है." इतना बोल कर वो वापस चले गये. मुझे तो समझ नही आ रहा था कि हो क्या रहा है. इतने मे दोनो मेरी साड़ी उपर उठाने लगे. मै झुकने की कोशिश कर रही थी पर धीरे धीरे दोनो ने मेरी साड़ी पुरी कमर से ऊपर उठा दी और मेरे जांघो से खेलने लगे. जब संतुष्ट हो गये तो दोनो ने थाली से रंग लिया और मेरे स्तन और जांघो पर लगा कर बाहर चले गये. मैने जल्दी से अपने कपड़े ठीक किये और अपने कमरे मे चली गई और सारा दिन कंफ्यूज सी वही पड़ी रही.

शाम को इनके ३-४ दोस्त आये और मुझे हुकुम मिला कि मै जा कर उनके दोस्तो को नाश्ता परोसूं. मैने एक अच्छी सी साड़ी पहनी और नाश्ता लेकर ड्राईंगरूम की तरफ चल दी. ड्राईंगरूम में घुसते ही शराब का तेज भभका मारने लगा. अंदाजा हो गया सब बैठ कर शराब पी रहे है. मैने देखा की रूम में ये और इनके चार दोस्त बैठे है और ग्लास मे शराब डाल कर पी रहे है. सारा सामान टेबल पर रख कर वापस जाने को हुई तो मेरे पति ने नाश्ता परोसने को कहा. अनमने मन से नाश्ता निकालने लगी और एक प्लेट मे सजा कर इनके एक दोस्त को परोसने गई. उसके सामने झुक कर मैने प्लेट उसकी तरफ बढ़ाई. वो वैसे ही बैठा रहा जब मेरे पति ने कहा, "नाश्ता ले लो." उसने दोनो हाथ बढ़ा कर मेरे दोनो स्तन को थाम लिया. एक बार प्लेट छुटने को हुआ पर फिर सम्भल गई. अचानक अगर होता तो धक्का लगता पर सुबह से इतना हो चुका था कि आदत सी हो गई थी. सब की असलीयत सामने आ रही थी. वो मेरे स्तनो को आहिस्ते आहिस्ते मसलने लगा. मैने मुड कर अपने पति कि तरफ देखा को पाया कि वो मुझे देख कर मुस्कुरा रहे है. मै समझ गई कि सब मे इनकी रजामंदी शामिल है. जो मेरे स्तनो से खेल रहा था बड़बड़ाया, "पता नही बिना ब्लाऊज के कैसे दिखता होगा?" मै गुस्से मे तो थी ही एक झटके से प्लेट साईड मे रख कर सीधे खड़ी हो गई. मैने जल्दी जल्दी ब्लाऊज के बटन खोले और ब्लाऊज के दोनो पटो को अगल करके ब्रा को उपर सरका दी और झुक कर खड़ी हो गई. मैने धीरे से कहा, "ऐसे दिखते हैं!!!" उनका एक और दोस्त सामने सरक गया और दोनो ने मेरे एक एक स्तन को थाम लिया और मेरे स्तन से खेलने लगे. उन दोनो ने मेरे निप्प्ल को मुंह मे ले कर चुसने भी लगे. मैने फिर मुड कर अपने पति की तरफ देखा वो अब भी मुस्कुरा रहे थे. तभी उनके एक और दोस्त ने कहा, "आगे का नजारा तो मस्त है, पर पिछे का?" इस से पहले कि मेरे पति कुछ कहते मैने खुद ही झुके हुऐ हालत मे अपनी साड़ी उठाने लगी और कुछ ही पल में साड़ी कमर तक उठा चुकी थी. मैने एक झटके से अपनी पेन्टी खींच कर घुटनो के नीचे तक सरका दी. उनके दोनो दोस्त उठ कर पास आए और मेरे चुत्तड़ो और जांघो से खेलने लगे. थोड़ी देर में मेरे पति ने कहा, "बस बस, क्या दिवाली मना लोगे." वो लोग मुझे छोड़ कर अगल हुए और मेरे पति ने मुझसे कहा, "तु अंदर जा अब." मैने साड़ी निचे खीच ली और ब्रा को सही किया, ब्लाऊज के बटन को बंद करते हुए अंदर जाने लगी.

जब मै स्मिता जेठानी के कमरे के सामने से गुजरी तो अंदर से आवाजे आ रही थी. छोटे जेठ जी बाहर बैठे थे और मेरे पति अपने दोस्तो के साथ शराब पी रहे थे, मैने सोचा फिर अंदर कौन हो सकता है. उतसुकता में मैने पाया कि खिड़की का एक पल्ला खुला हुआ है. मैने आस पास देखा कि कोई नही है तो अंदर झांका. अंदर देखा तो दंग रह गई. स्मिता जेठानी जी निर्वस्त्र बिस्तर पर पड़ी थी. राजेश और

मकरन निर्वस्त्र उनके बगल मे लेटे हुए थे और उनके स्तनो, जांघो और चुत से खेल रहे थे. स्मिता जेठानी जी दोनो के सर में अपनी उंगलियां फिरा रही थी और पुछ रही थी, "आज बहुत जल्दी मूड बन गया आप दोनो का." मकरन बोला, "सुबह सुबह छोटी भाभी के निर्वस्त्र बदन को देखे है. जोश आ गया." स्मिता जेठानी जी ने पुछा, "इतने आसानी से कपड़े उतार दी." मकरन बोला, "अरे नही, जबर्दस्ती खोल और उठा कर देखे है, पता नही हमारे साथ कब लेटेगी." स्मिता जेठानी जी बोली, "अभी महुरत नही हुआ है उसका, अभी टाईम है. चलो अब जल्दी निपटो, इसके बाद कृष्णकांत अपने चार दोस्तो को ले के आ जायेगा, तुम लोगो की तो होली है मेरी तो दिवाली हो जायेगी. आज के दिन इतनी कुटाई होती है मेरी कि दिवाला निकल जाता है मेरा." मकरन उनकी टांगे फैला कर उनके उपर चढ़ने लगा. इससे आगे मैने देखना ठीक नही समझा. मै अपने कमरे की तरफ बढ़ गई. रास्ते मे यही सोच रही थी के भविष्य मेरा यही है, पतिव्रता नही एक वेश्या कि जिन्दगी, बस ये देखना है शुरूवात कैसे होगी.

होली के बाद एक हफ्ते सब सही चला. रविवार का दिन था सबका घूमने का प्रोग्राम बना. मेरे पति बड़ी छोटी जेठानी जी, बड़े जेठ जी और मेरे ससुर जी तैयार होकर निकल गये. घर मे मै मेरी सास और रमाकान जी रूक गये. मै घर का काम निपटाने लगी. दोपहर तक फुर्सत हो गई और मेरी सास अपने कमरे मे चली गई. उनको दोपहर मे सोने की आदत है. उनके जाने के बाद मै रमाकांत जी को ढूंढने लगी, वो बाहर गार्डन मे टेबल पर पैर फैला कर सो रहे थे. मै झटपट रूम मे आई और कपड़े उतार कर टावेल लपेट ली. सुबह से नहाई नही थी सो सोचा कि नहा लूं. बाथरूम मे गई तो प्राब्लम पता थी, कुंडी टुटी थी. सो मैने टावेल निकाल कर दरवाजे पर लटका दिया और नहाने लगी. नहा कर मै पलटी और हाथ बढ़ा कर टावेल पकड़ना चाहा तो टावेल नदारद था. पहले तो लगता था कि मुझसे गलती हो जाती है पर आज पक्का यकीन हो गया कि किसी की शरारत है. मै सोच ही रही थी कि क्या करूं कि अचानक दरवाजा खुला और रमाकांत जी अंदर आ गये. मुझे देखा और बड़बड़ाए, "फिर से, तुम नही सुधर सकती. मुझे क्या!" मै कुछ बोल नही पा रही थी बस एक झटके से एक हाथ से अपने स्तनो को और एक हाथ से अपने चुत को छुपा लिया. जेठ जी बोले, "घर मे कोई नही है, चलो तुमसे ही बात कर लेता हूं." बाथरूम मे एक ४ फीट ऊंची टंकी बनी हुई थी. उन्होने दरवाजा भिड़ा दिया और उसके किनारे मे टिक कर बैठ गये. उन्होने कहा, "मेरी तुम्हारी बात कम ही होती है, आज अच्छे से बात हो जायेगी. और बताओ कृष्णकांत कुछ करता तो नही है, तुम्हारे जरूरते कैसे चलती है?" मै बस सर झुका कर खड़ी रही कुछ बोले नही. वो आगे बोले, "पहले कभी किसी के साथ कुछ की हो या ऐसे ही कोरी हो." मैने

कुछ नही कहा तो गुस्से मे दहाड़ते हुए बोले, "कुछ पूछ रहा हूं, मुंह है कि नही." फिर प्यार से पुचकारते हुए बोले, "अरे बता न, मै किसी को कुछ नही कहूंगा." मै जल्द से जल्द उनको टालना चाहती थी और जानती थी यहां तो सब के सब एक से एक है तो बोली, "एक बार." उन्होने पुछा, "किसके साथ." मैने धीरे से सर झुका कर कहा, "मेरे मामी के भाई है, मेरे साथ एक बार जबरदस्ती किये थे." उन्होने सर हिलाया और कहा, "अच्छा, तेरा बदन तो काफी भरा है, क्या हाथ से ढंक रही है, हाथ नीचे कर मै भी तो देखूं कि कैसे दिखती है." मैने एक बार सर उठा कर देखा और फिर सर झुका लिया. वो आगे बोले, "अरे हाथ हटा न, तु तो शरमा रही है. हटा नही तो मै हटा दूंगा." मै धीरे से हाथ निचे कर दी, मैने सर ऊपर करके तो नही देखा पर यकीन था कि वो नजरे गड़ाये मेरे बदन को घूर रहे होंगे. दो मिनट बाद बोले, "तेरा बदन तो काफी जोरदार है. क्या खिलाती थी तेरी मां तुझे? आ पास आ जरा छू कर देखूं." मैने गुस्से से उपर देखा तो वो हंस कर बोले, "क्या हुआ, चल मेरे पास आ." मै बस गुस्से से घूरती रही. अचानक उन्होने एक झटके से मेरे दोनो स्तनो को पकड़ा और मुझे पास खींच लिया. दांए हाथ से मेरे बांए स्तन को मसल रहे थे और बांए हाथ मेरी कमर मे डाल दिये.

अचानक हुआ तो कुछ समझ नही पाई पर जैसे समझी वैसे ही उनकी पकड़ से निकलने की कोशिश करने लगी. जब असफल रही तो जोर से चिल्लाई, "छोड़िये मुझे." उन्होने मुझे छोड़ा तो नही बस कुछ पल के लिए रूक गये. अचानक दरवाजा खुला और मेरी सास सामने खड़ी थी. मेरी सास ने रमाकांत जी से कहा, "क्या हो रहा है रमा?" रमाकांत जी बोले, "कुछ नही आपकी बहू को आशीर्वाद दे रहा." उन्होने सर हिलाया और मुझसे कहा, "बहू जब जेठ आशीर्वाद दे रहा तो चुप चाप ले क्यों नही लेती, चिल्ला कर मेरी नींद क्यों खराब कर रही है. अब एक शब्द भी नही, एक दम चुप रहना. हमारे घर के रसम अभी भी नही जानी है क्या? अब चिल्लाई तो कृष्णकांत को आने दे बेल्ट से पिटवाऊंगी." वो रमाकांत जी से बोली, "बेटा तू अपना काम कर ले मै चलती हूं." इतना बोल कर वो चली गई. मै तो समझ गई कि आज मै गई काम से. मैने विरोध करना बंद कर दिया. रमाकांत जी मेरे स्तनो से खेलने लगे, बीच बीच मेरे मेरे निप्पल चुस लेते. जिस हाथ से वो मेरे कमर को पकड़े हुए थे उस हाथ से मेरे चुत्तड़ो को भी सहला रहे थे. उन्होने मेरे गालो को गले को और मेरे होंठो को भी चुमने लगे. अचानक मुझे एक झटके से छोड़े और बोले, मेरे कपड़े खराब हो रहे है. और जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतारने गये. एक दम नंगे हो कर फिर बैठ गये और मुझे दोबारा पकड़ लिए और मेरे जिस्म से खेलने लगे. दो मिनट के बाद मुझे बोले, "तमीज नाम की चीज नही है तेरे में, इसको पकड़ने के लिए तेरी मां को बुलाऊं." मैने गुस्से से उन्हे देखा तो उन्होने मेरे एक हाथ को अपने लण्ड पर रख दिया और दोबारा मेरे बदन से खेलने लगे.

दो मिनट बाद फिर बोले, "साली सहलाने मे तेरी मां मरी जा रही है." मैने गुस्से से दांत पीसे और उनके लण्ड को हलके हलके सहलाने लगी. अचानक दरवाजा खुला और मेरे पति सामने खड़े थे.उन्होने प्यार से पुच्कारते हुए कहा, "क्या भईया, सील तोड़ रहे हो." रमाकांत जी बोले, "नही छोटे, सील तो पहले ही टुड़वा चुकी है. अभी तो बस चख रहा हूं. तु अकेला वापस आया है. मेरे पति बोले, "हां पैसे लेने आया हूं, आप निपटो मै चलता हूं. रात में भाभी के पास आऊंगा." रमाकांत जी बोले, "मै इसके साथ सो जाऊंगा." रमाकांत जी मेरे बदन से खेलते रहे. जब संतुष्ट हो गये तो मुझे दीवार से सटा दिये और मेरी जांघे फैलाने लगे. उन्होने मेरी चुत कर अपना लण्ड लगाया और एक झटके से उसे अंदर डाल दिया. मेरी चुत कोरी तो थी नही इसलिए आसानी से लण्ड अंदर समा गया. वो कुछ देर वैसे ही रहे और फिर धीरे धीरे झटके लगाने लगे. धीरे धीरे उनकी गति बढ़ती गई और एक चरम पर पहुंच कर उन्होने मेरी चुत के अंदर ही पानी छोड़ दिया. वो अलग हुए और फिर शावर खोल कर पहले खुद नहाए फिर मुझे नहलाने लगे. उन्होने अपने कपड़े बाल्टी मे डाल दिया और मुझे गोद मे उठा कर कमरे तक लाए. बिस्तर पर मेरा टावेल पड़ा था और एक दवाई का डब्बा पड़ा था. उन्होने मुझे गोद से उतारा और पहले खुद का बदन पोछा फिर मेरे कंधे कर टावेल रख दिये और दवाई का डब्बा उठा कर मुझे दिया. मुझसे बोले, "देखो मोना! अब तुम्हारा उदघाटन हो चुका है, तो अब तो आये दिन तुम्हारा सामाजिक कार्यक्रम होता रहेगा. जब भी हो तब एक गोली खा लेना, गर्भ नही रूकेगा." ये बोल कर उन्होने खुद एक गोली निकाल कर मुझे दिया और पानी का ग्लास दिया. मैने खा लिया तो वो मेरे ही बिस्तर पर पसर गये और चादर ओढ़ ली. मैने खुद को पोछा और ब्रा, पैंटी और नाईट गाऊन निकाली. वो एक झटके से बोले, "ब्रा पैन्टी मत पहन्ना, गाऊन भले ही डाल ले." मैने ब्रा पैन्टी वापस रख कर गाऊन डाल लिया. और आंगन मे चली गई.

शाम ७ बजे तक सब वापस आये और मुझे बुला कर किचन मे रात का खाना बनाने लगे. ९ बजे तक खाना तैयार था और तो सब ने बैठ कर खाना खाया. बरतन धोते १० बज गये और फिर सब अपने अपने कमरे मे चले गये. मै भी अपने कमरे मे घुस गई. कमरे मे घुसते ही देखा कि रमाकांत जी बिना कपड़ो के बिस्तर पर लेटे है और सिग्रेट पी रहे है. मैने उन्को दो पल देखती रही तो वो बोले, "क्या? दोपहर मे तो बताया था कि आज रात मै यहां रूकुंगा, याद नही है क्या?" मै कुछ नही बोली तो वो बोले, "अब फटाफट गाऊन उतार कर आ जा." मैने बात को अन्सुना करते हुए गाऊन मे ही बिस्तर पर लेट गई. उन्होने मुझे गुस्से से देखा फिर सिग्रेट बुझाई और मुझे कमर से पकड़ कर अपनी ओर खींच लिये. उन्होने मेरे गाऊन के चेन को खोला और मेरे गाऊन के दोनो पटो को अलग कर दिया. जैसे

ही पट अलग हुए मैने धीरे से कम्बल अपने उपर ले लिया. वो मुस्कुराए और खुद भी कम्बल मे घुस गये. और मेरे स्तनो से खेलने लगे. मैने कुछ कहा नही बस लेटी रही. अचानक एक कॉल आया और उन्होने फोन उठाया. वो दो मिनट तक बात करते रहे पर सिर्फ हां या न बोले और कुछ नही. फिर फोन रख दिये और वापस अपने हरकतो मे लग गये. दो मिनट बाद मेरे कमरे का दरवाजा खुला और बड़े जेठ जी एकदम नंगे मेरे कमरे मे घुसे. रमाकांत जी बोले, "भाभी आपको पर्मिशन दे दी." बड़े जेठ जी ने सर हिलाया और मेरे बगल मे आकर कम्बल मे घुसे और लेट गये. दोनो भाई ने अपना एक एक पैर मेरे जांघो पर रखा और मेरे एक एक स्तन को पकड़ कर सहलाने मसलने लगे. वो दोनो मेरे गले के पास, और गालो पर चुम भी रहे थे. दोनो एक घन्टे तक वैसे ही पड़े रहे और फिर बड़े जेठ जी ने इशारा किया. वो उठ कर मेरे उपर आ गये और मेरी जांघो के बीच आ गये. उन्होने टटोल कर मेरे चुत के छेद पर अपना लण्ड लगाया और एक झटके से उसे अंदर डाल दिये. और धक्के लगाने लगे. एक निश्चित समय तक धक्के लगाने के बाद वो मेरी चुत मे पानी छोड़ कर मेरे बगल मे लेट गये. इसके बाद मेरे उपर रमाकांत जी आ गये और मेरे चुत मे लण्ड डाल कर धक्के लगाने लगे. उन्हे भी ज्यादा समय नही लगा और उन्होने भी मेरी चुत मे पानी छोड़ा और मेरी बगल मे लेट गये. दोनो एक एक पैर मेरे पैरो कर और एक एक हाथ मेरे छाती और कमर पर डाल कर सो गये. नींद तो मुझे भी आ रही थी सो मै भी सो गई.

सुबह उठी तो दोनो जा चुके थे. मै दिन भर के कामो मे लग गई. दोपहर को खाने की मेज सजा रही थी. बड़ी जेठानी और छोटी जेठानी भी मदद कर रहे थे. तभी रमाकांत जी आ गये, उन्होने मुझे पीछे से पकड़ा और मेरे गले को चुमने लगे. उन्होने कहा, "तेरी बदन की कशिश ऐसी है कि तू सामने रहे तो खुद को रोक नही पाता." मै उनकी पकड़ से छूटने की कोशिश कर रहे थी तो उन्होने मुझे जमीन से उठाया और मेरे कमरे की तरफ चल लिये. कमरे मे पहुंच कर उन्होने मुझे बिस्तर पर लिटा कर मेरी साड़ी उपर की और जल्दी जल्दी निपटने लगे. निपट कर वो बाहर चले गये और मै लुटी पिटी कपड़े ठीक कर वापस आ गई. फिर तो अक्सर दोपहर मे रमाकांत जी या बड़े जेठ जी मुझे सब के सामने पकड़ लेते और कमरे मे ले जा कर अपनी हवस मिटा लेते. मैने भी अब विरोध करना बंद कर दिया था.

एक शाम को मेरे पति मुझे तैयार होने के बोले, कहा कि पार्टी मे जाना है. मै तैयार हो गई तो उन्होने मुझे डीप गला पहनने को कहा. मै फिर ब्लाऊज उतार कर डीप गला पहना. मुझे लग ही रहा था कि मेरी नुमाईश करवाने ले जा रहे है. उनके साथ तैयार होकर पार्टी मे पहुंची. सब से मिलवाने के बाद साईड मे एक सोफे के पास ले गये. वहां इनकी ही उमर का एक आदमी कुछ लोगो के साथ बैठा था. ये

उसे नमस्ते करके मेरा परिचय करवाये. वो आदमी कुर्ता पैजामा मे बैठा था. वो मुझे उपर से नीचे था घूर रहा था, आंखो मे वासना साफ दिख रही थी. मुझे भी उस आदमी से मिलवाये, उसका नाम था धरम विजय सिंह चौधरी यानि डी.वी.एस.सी. उसने मेरे पति से कहा, "लग तो रहा है." मेरे पति ने कहा, "आपको पसंद है." डी.वी.एस.सी. ने कहा, "बिना देखे कैसे बोलुं, कल आना तो चेक करके बताऊंगा." उसके बाद दोनो की बात नही हुई और खाना खा कर हम वापस आ गये.

अगले दिन उन्होने ११ बजे सुबह ही तैयार होने का आर्डर दे दिया. मै तैयार हुई और उनके साथ कार मे एक बड़े आलिशान घर मे पहुंची. हम दोनो अंदर पहुंचे तो पता चला कि डी.वी.एस.सी. का घर है. वो खुद सोफे पर बैठा था और हम दोनो सामने बैठ गये. मेरे पति उससे बात करने लगे. पर मुझे एक भी बात पल्ले नही पड़ी. ३० मिनट के बाद मेरे पति मुझसे बोले, "मोना तुम रूको मुझे कुछ सामान लाना है मै ३० मिनट मे आता हूं." मैने कहा कि मै यहां क्या करूंगी अकेले तो बोले कि डी.वी.एस.सी. से बात करना. मै मना करती रही और वो मुझे छोड़ कर चले गये. उनके जाते ही डी.वी.एस.सी. दो और आदमी आकर हमारे पास बैठ गये और मुझे निहारने लगे. डी.वी.एस.सी. ने कहा, "अरे मोना आराम से बैठो."

मैने धीरे से कहा, "जी आराम से ही बैठी हूं." डी.वी.एस.सी. हंसने लगे तो एक आदमी ने मुझसे कहा, "अरे आराम से का मतलब नही पता क्या? ये कपड़े उतार और आराम से बैठ जा." मै एक झटके से खड़ी हो गई तो बाकी दोनो भी खड़े हो गये. एक ने कहा, "क्या हुआ?" मैने धीरे से कहा, "मुझे घर जाना है." उसने एक जोर का झापड़ मुझे मारा और कहा, "जब डी.वी.एस.सी. बोल रहे है की आराम से बैठ तो कर. तु खुद कपड़े उतार रही है कि मै फाडूं." डर के मारे तो हालत खराब थी. मै मुड़ मुड़ कर दरवाजे की तरफ देख रही थी. डी.वी.एस.सी. ने कहा, "तेरा पति नही आयेगा. तू उसका इन्तिजार मत कर. ये सब उसकी मर्जी से हो रहा है. अब ज्यादा इन्तेजार मत करवा और फटाफट कपड़े उतार वर्ना कपड़े फट जायेंगे और यहां से तू नंगी घर जायेगी वो भी आटो से." कोई चारा नही था तो कपड़े उतारने लगी. ज्यादा समय नही लगा मुझे नंगी होने मे. वैसे ही तीनो के सामने बैठ गई और तीनो मेरे बदन की तारीफ करने लगे. ५ मिनट के बाद डी.वी.एस.सी. उठ कर मेरे पास आये और मुझे कहा, "लेट जा, तेरी चुत का मजा लेकर देखता हूं." मै सोफे पर लेट गई और वो मेरे उपर लेट गये और मेरे बदन से खेलने लगे. मेरे स्तनो को जोर जोर से मसलने लगे, मेरे जांघो पर हाथ फिराने लगे और मेरे होठो को चुमने लगे. वो खुद भी ज्यादा इंतिजार नही करना चाहते थे सो अपना पैजामा खोल कर निचे सरकाये और मेरी जांघे फैला कर बीच मे आ गये. विरोध करने की तो हिम्मत ही नही थी सो मेरी चुत मे अपना लण्ड डाल कर धक्के लगाने लगे. उनका लण्ड काफी मोटा था और मुझे दिक्कत भी हो रही थी पर मै

फिर भी उन्हे बर्दाशत करती रही. आखिर मे उन्होने मेरी चुत मे पानी छोड़ दिया और मुझे कपड़ा दिया कि खुद को साफ कर लूं. उसके बाद मैने अपने कपड़े पहन लिये और उन्होने मुझे जाने की परमिशन दे दी.

वहां से निकली तो गुस्सा बेशुमार था सो सीधे पुलिस स्टेशन पहुंची. इंस्पेक्टर ने काम पुछा तो मैने उसे बताया कि एक रेप की कम्पलेन लिखवानी है. उसने पुछा किसके साथ रेप हुआ है. मैने कहा कि मेरे साथ. उसने पुछा, "किसने किया है." मैने कहा, "एक आदमी है धरम वीर सिंह चौहान, उसने ही रेप किया है मेरे साथ." सारे लोग पलट कर मुझे ही देखने लगे. इंस्पेक्टर ने भी मुझे घूरा फिर प्यार से कहा, "मामला संगीन है, चलिए अंदर चलते है वही रिपोर्ट लिख लेते है." मैने सर हिला दिया और हम उठ कर अंदर चले गये. अंदर केबिन था जिसमे एक टेबल रखा था और साईड मे एक सोफा रखा था. उसने मुझे कुर्सी पर बैठाया और मुझसे पुछताछ करने लगा. उसने मुझसे कहा कि वो एक बड़ा आदमी है और मैं बाद मे मुकर तो नही जाऊंगी. मैने कहा कि मै नही मुकरूंगी. उसने मुझसे कहा कि मुलाईयेजा करवाना पड़ेगा, मतलब शारीरिक जांच, जिसे रिपोर्ट मे दर्ज करना होगा. उसने बताया कि एक लेडी पुलिस वाली आयेगी और वो जांच करेगी. मैने सर हिलाया और वो उठ कर चला गया. दो मिनट के बाद एक लेडी पुलिस हवलदार आई, साथ मे एक लेडी डाक्टर भी थी. दोनो ने मुझे कपड़े उतारने को कहा. मै थोड़ा रूकी तो डाक्टर ने कहा, "देखो कुछ चेकअप करना है और बदन पर निशान भी देखना है, कपड़ो के साथ दिक्कत आयेगी." मैने झिझिकते हुए कपड़े उतार दिये. पूरी तरह नंगी हो गई तो लेडी कांस्टेबल ने कपड़े ले लिए और बाहर निकल गई. डाक्टर ने मुझे परेशान देख कर कहा, "कुछ टेस्ट कपड़ो पर भी होता है, कर के वो कपड़े वापस ले आएगी." डाक्टर ने फिर मुझे सोफे पर लेटने को कहा और मेरे लेटते ही मेरे स्तनो और चुत की जांच करने लगी. थोड़े देर बाद वो एक कागज पर कुछ कुछ लिखती जा रही थी. काम खत्म करके उसने कहा, "थोड़ी देर रूको एक ऑफिसर आकर तुम्हारा ब्यान ले लेगा और एफ.आई.आर लिख लेगा. मैने सर हिलाया तो वो बाहर निकल गई. मै सोफे से उठ कर कुर्सी पर सिमटी सी बैठ गई.

दो मिनट बाद एक ऑफिसर आया और सीधे सामने वाली कुर्सी पर आ कर बैठ गया. मैने जल्दी से अपने जांघो को सटा लिया और अपने स्तनो पर हाथो से कैंची बना ली. ठीक उसी टाईम एक हवलदार आया और मेरे बगल वाली कुर्सी मे बैठ गया. मुझे बड़ा बेकार लग रहा था कि एक तो मै नंगी हूं और दो मर्द आकर सामने में बठ गये है. ऑफिसर ने कहा, "नाम?" मैने नाम बता दिया. ऑफिसर ने कहा, "हाथ निचे कर." मैने कुछ कहा नही तो हवलदार बोला, "साहब बोल रहे है कि जो कैंची तूने बना रखी

है उसे नीचे कर." मैने फिर कुछ नही कहा तो हवलदार ने मेरे दोनो हाथ पकड़ कर जबरदस्ती निचे कर दिया. मै सर झुका कर बैठी रही. आफिसर ने अपने हवलदार से कहा, "मां कसम क्या रसीला मामे है. जिस जिस ने स्वाद चखा होगा साला बहुत किस्मत वाला होगा." मुझे तोह समझ ही नही आ रहा था कि हो क्या रहा है. फिर उसने मुझसे पुछा, "कितने सालो से धंधा कर रही है?" मैने सर उठा कर उसे देखा और घूरा. उसने भी मुझे घूरा और कहा, "क्या घूर रही है, मैने पुछा कितने सालो से जिस्मफरोशी का धंधा कर रही है?" मैने तुनक कर कहा, "मै यहां अपने उपर ब्लातकार कि रिपोर्ट लिखाने आई हूं." उसने अच्म्भे से मुझे देखा और जल्दी जल्दी पन्ने पलटने लगा. फिर मुझसे कहा, "ये कैसे हो सकता है, यहां तो ये लिखा है कि तू दो लड़को के साथ निर्वस्त्र एक होटल रूम से धंधा करते पकड़ाई है. सबूत के तौर पर एक विडियो क्लिप भी है." मै तो धक रह गई. मैने कहा, "नही ऐसा कुछ नही है. आप इंस्पेक्टर साहब को बुलाईये जिन्होने मेरी रिपोर्ट लिखी थी." इससे पहले कि कोई कुछ करता वो इंस्पेक्टर खुद ही कमरे मे आ गया. आफिसर ने कहा, "इंस्पेक्टर साहब, ये तो कुछ और ही कहानी बता रही है. पर रिपोर्ट के हिसाब से तो ये धंधे वाली है और सबूत के साथ पकड़ाई है. आप ही बताईये सही क्या है." इंस्पेक्टर ने कहा, "ये सही बोल रही है, ये ब्लातकार का रिपोर्ट लिखाने आई है." आफिसर ने कहा, "पर रिपोर्ट." इंस्पेक्टर ने कहा, "मैने ही लिखा है. अभी सबूत नही है पर सबूत बनाने पड़ेगे. पहले तो कैमरा के सामने इससे कबूलवाओ कि ये धंधे वाली है." आफिसर ने सर हिला दिया. मुझे कुछ समझ ही नही आ रहा था. इंस्पेक्टर ने मुझे कंधे से पकड़ कर उठाया और कमरे के बीच खड़ा कर दिया. हवलदार थोड़ी देर के लिए बाहर गया और एक विडियो कैमरा ले आया और मुझे फोकस करके चालू कर दिया. मैने फोरन ही अपने हाथ से अपने स्तनो को ढक लिया. इंस्पेक्टर ने कहा, "हाथ निचे कर कर." मैने कुछ नही किया तो अचानक उसने एक गन्ना उठाया और जोर से मेरे चुत्तड़ो पर मारा. दर्द कि लहर मेरी चुत्तड़ो पर आया और मैने स्तन छोड़ कर चुत्तड़ो को मसलने लगी. जैसे ही दर्द शांत हुआ तो फिर से स्तनो को ढकने को हुई तो इंस्पेक्टर ने कहा, "हाथ फिर उपर ले जायेगी तो फिर से पड़ेगा." मै हाथ उपर नही ले जा सकी और वैसे ही खड़ी रही.इंस्पेक्टर ने मुझे एक कैमरा के पीछे एक स्क्रीन दिखाया और बोला, "मै सवाल पुछूंगा, जवाब यहां लिखा है, पढ़ती जाना, अगर गलती हुई तो चुत्तड़ लाल कर दूंगा." मैने सर हिलाया. कैमरा चालू हो गया. मेरा इंटर्वयू चालू हो गया.

इंस्पेक्टर - "कितने सालो से धंधा कर रही है."

मै - "चार सालो से."

इंस्पेक्टर - "दिन भर मे कितने लोगो से चुदवाती है."

मै - "कभी चार कभी ६ कभी कभी १० भी हो जाते है."

इंस्पेक्टर - "रेट कितना है तेरा."

मै - "४००/आदमी"

इंस्पेक्टर - "आज कि कहानी बता."

मै - "आज सुबह मेरे दलाल ने मुझे बताया कि दो लोग मेरा होटल पूनम मे रूम नम्बर ३०२ मे वेट कर रहे है और पूरे दिन का १००० रू दे रहे है. मै ठीक दर बजे वहां पहुंच गई और दो लोग मुझे कमरे में मिले. दोनो ने काफी देर तक मेरे जिस्म को भोगा, अचानक पुलिस की रेड पड़ी और मै पकड़ा गई."

इंस्पेक्टर ने कैमरा बंद करने को कहा और एक जगह साईन करके को कहा. मैने लड़खड़ाते हाथो से साईन किया. मै जानती हूं कि इतने से इंटर्वयू के लिए मुझे कम से कम १५ गन्ने पड़े थे मेरे चुत्तड़ो पर. इंस्पेक्टर ने मुझे बांह से पकड़ कर बाहर लाया और एक दूसरे कमरे मे ले गया. वो कमरा एक होटल के कमरे के जैसा था. इंस्पेक्टर ने हवलदार से कहा, "जा जाकर दो कैदियो को हवालात से निकाल ला." हवलदार चला गया और ५ मिनट मे दो लड़को के साथ वापस आया. इंस्पेक्टर ने कहा, "दोनो लूट के मामले मे पकड़ाये हो, मै उसमे तुम दोनो को बरी कर सकता हूं. पर तुम दोनो के खिलाफ वेश्या के साथ होटल मे पकड़ाने का केस बना देता हूं. बोलो मंजूर है." दोनो एक दूसरे को देख कर बोले, "मंजूर है साहब." इंस्पेक्टर ने दोनो से कहा, "चलो फिर नंगे हो जाओ और इसके साथ बिस्तर पर लेट जाओ और माहोल बनाओ." दोनो को एक मिनट नही लगा कपड़े उतारने मे. इंस्पेक्टर ने मुझे बिस्तर पर लेटने को कहा पर मै हिली नही तो उसका गन्ना लहराया. मै डर से बिस्तर पर लेट गई. दोनो मेरे उपर लेट कर मेरे बदन से खेलने लगे. इंस्पेक्टर रिकार्डिंग करने लगा. दो मिनट बाद दोनो को उठाया गया और उनका भी इंटर्वयू हुआ और फिर दोनो को बाहर ले जाया गया. आफिसर ने इंस्पेक्टर ने पुछा, "अब इसका क्या करना है." इंस्पेक्टर ने कहा, "बंद कर दे इसको भी हवालात में."

आफिसर ने मुझे खींचते हुए एक गैलरी मे ले गया और एक गेट खोल कर मुझे अंदर जाने को कहा. मै जैसे ही अंदर घूसी उसने गेट बंद कर दिया. वहां के हालात देख कर मेरे तो पसीने छूट गये. जहां मै थी वो एक हवालात था. मेरे अगल बगल एक एक हवालात था और सामने तीन. सब मे ५-५ लोग बंद थे

और सब पर ताला लगा था. मै पहले से नंगी थी सो सब मुझे ही घूर रहे थे. बदन छुपाने का कोई जरिया नही था. सब मुझे कुत्तो की तरह घूर रहे थे. तभी इंस्पेक्टर और आफिसर मेरे हवालात के सामने आ गये. आफिसर ने पुछा, "इंस्पेक्टर साहब अब क्या करना है इसका?" इंस्पेक्टर ने कहा, "धंधे वाली है. शाम को हम सब निपट लेते है, जी भर कर इसके जिस्म को भोग लेंगे. उसके बाद रात मे सारे हवालात के दरवाजे खोल देना, सब कैदी भी रात भर इसके साथ ऐश कर लेगे." आफिसर बोला, "तैयार नही हुई तो?" इंस्पेक्टर बोला, "ब्लातकार ही करना पड़ेगा न. दो दिन तक रही रखेंगे और फिर कोर्ट मे पेश कर देंगे. वहां से अपना आदमी इसे जमानत पर निकालेगा और सीधे किसी चकले पर बेच देगा."

मुझे तो काटो तो खून नही, मैने हाथ जोड़ कर इंस्पेक्टर से कहा, "इंस्पेक्टर साहब, आप जो बोलेंगे मै वो करूंगी बस मुझे इसमें मत फसाईये." इंस्पेक्टर ने ताला खुलवाया और दोनो अंदर आ गये. दोनो ने फटाफट अपने कपड़े उतारे और नंगे हो गये. इंस्पेक्टर ने मुझे दीवार से सटा दिया और बेदर्दी से मेरे स्तनो को मसलने लगा. मै चुपचाप रही, फिर जब इंस्पेक्टर संतुष्ट हुआ तो उसने अपना लण्ड सहलाया और मुझे कहा, "चल घुटने के बल बैठ और मेरा लण्ड चूस." मैने धीरे से कहा, "मैने कभी नही किया." इंस्पेक्टर ने कहा, "मै क्या करूं तो, मुझे यही चाहिए. कर वरना जो बोला हूं वो करूंगा." मै एक मिनट सोची और घुटनो के बल बैठ कर उसके लण्ड को मुंह में ले ली और धीरे धीरे चुसने लगी. बहुत बेकार लग रहा था पर जैसे तैसे चूस रही थी. इंस्पेक्टर ज्यादा से ज्यादा मेरे मुंह के अंदर घुसाये पड़ा था. आखिर में उसके लण्ड ने मेरे मुंह मे ही पानी छोड़ दिया. मैने उसके सारे वीर्य को एक किनारे उगल दिया और वो अपने कपड़े पहनने लगा. उसने आफिसर को देखा तो वो बोला, "साब मै तो गांड़ मारूंगा." इंस्पेक्टर बोला, "ठीक है. मार ले." उसने मुझे उठाया और मुझे मेरे दोनो हाथ दिवार पर रखवाया. फिर मुझे झुका कर मेरे जांघो को फैलाया और अपन लण्ड पर धेर सा वैसलीन लगा कर मेरे पीछे आ गया. उसने मेरे चुत्तड़ो को फैलाया और मेरे गांड़ के छेद पर अपना लण्ड टिका दिया. उसने एक झटके से अपना लण्ड अंदर घुसा दिया. मेरे मुंह से जोर की चीख निकल गई. मै तड़पने लगी तो वो थोड़ा रूका और मेरे शांत होने की प्रतीक्षा करने लगा. मै शांत हुई तो धक्के लगाने लगा. लगातार धक्के लगाने के बाद वो पानी छोड़ कर अलग हुआ. इंस्पेक्टर ने उसके कान मे कुछ कहा और वो बाहर चला गया. दो मिनट बाद वापस आया तो दोनो लड़को के साथ आया जिनके साथ मेरे नाम जोड़े थे. दोनो नंगे थे सो इंस्पेक्टर ने कहा, "दोनो का नाम फालतू मे फंसा है. एक काम कर दोनो को खुश कर दे, अपनी चुत से दोनो के लण्ड का प्यास बुझा दे. दोनो को लगे तो कि कुछ मजे करके केस बना है. फिर तुझे यहां से निकलने का तरीका बताऊंगा. अब फटाफट लेट जा जमीन पर और टांगे फैला ले." मै मशीन की तरह

जमीन पर लेट गई और टांगे फैला ली. इंस्पेक्टर ने कहा, "चलो दोनो निपट लो जल्दी से, तुम भी क्या याद करोगे कि किस दिल्दार इंस्पेक्टर ने पाला पड़ा था." दोनो मेरे पास आ गये. दोनो पहले से नंगे तो थे ही सो एक मेरे उपर चढ़ गया और मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा कर धक्के लगाने लगा. ऐसा लग रहा था कि जनमो से किसी लड़की के साथ नही सोया था सो मुझे नोच खसोट रहा था. एक दम जानवर बन गया था. मेरे होठों गले और स्तनो पर दांत भी गड़ा रहा था और मेरे स्तनो को जोर जोर से मसल भी रहा था. मै वैसे ही पड़ी रही और अपने चरम पर पहुंच कर उसने पानी छोड़ दिया. वो उठा तो दूसरा सवार हो गया. उसने भी पूरी प्रक्रिया वैसे ही की और पानी छोड़ कर अलग हो गया.

वो दोनो को इंस्पेक्टर ने कुछ इशारा किया और दोनो बाहर निकल गये. मैने आस पास दिखा तो सारे कैदी अपना अपना लण्ड निकाल कर हस्तमैथुन कर रहे थे. इंस्पेक्टर ने मुझे देखा और मुस्कुराया. मै घुटनो के बल बैठ गई और बोली, "इतने लोगो से साथ मै मर जाऊंगी." इंस्पेक्टर बोला, "मुझे पता है, पर एक काम तो कर सकती है न, सब अपने हाथ से हिला रहे है. तू जाकर अपने हाथ से हिला दे." बहस करने का तो सवाल ही नही था सो मै एक हवालात तक चली गई. सब ने इंस्पेक्टर की बात सुन ली थी तो सब अपने अपने लण्ड सलाखो के बाहर निकाल कर खड़े हो गये. मैने दो के लण्ड को दोनो हाथो से पकड़ा और हस्तमैथुन करने लगी. दोनो एक एक हाथ निकाल कर मेरे स्तनो से खेल रहे थे और दूसरे हाथ मे मेरे चुत्तड़ो से खेल रहे थे. आखिर दोनो का एक साथ पानी छोड़ दिया और मै आगे बढ़ गई. ज्यादातर लोग बहुत देर से हस्तमैथुन कर रहे थे तो किसी को भी पांच मिनट से ज्यादा नही लगा. पर २५ लोगो मे मुझे काफी समय लग गया. मेरे हाथ दुखने लगे पर यहां से निकलने का एक ही तरीका था. मै जब वापस आई तो उसने मुझे एक टेम्प्ररी बाथरूम दिखाया और मुझे नहाने को कहा. मै नहा कर वापस आई तो एक छोटा सा अंगोछा दिया और पानी पोछने के बाद वापस ले लिया. फिर हम सभी वापस उसी कमरे मे आ गये जहां मेरे चुत्तड़ो की दुर्गती हुई थी. सब अपनी अपनी कुर्सी लेकर बैठ गये और मुझे सोफे पर बैठने को कहा. मै सोफे पर बैठ गई तो इंस्पेक्टर ने किसी को कॉल किया और बहुत अदब से बात करने लगा.

लगभग १५ मिनट बाद डी.वी.एस.सी. कमरे मे घुसे, उनको देख कर मै सकते मे भी थी और पशोपेश मे भी. वो आये और सोफे पर मुझसे कुछ दूर बैठ गये. वो इंस्पेक्टर मुझे देख कर बोला, "देखो तुम को किसी न किसी के जमानत पर ही छोड़ सकते है. इनकी जमानत लोगी तो छोड़ देंगे. तुम इनसे बात कर लो, हम बाहर रूकते है. बात न बने तो बता देना, जो बोले है वो कर के दिखा देंगे." मै जानती थी कि मुझे डी.वी.एस.सी की बाते तो माननी ही थी, बस ये जानना था कि शर्त क्या क्या रखेगा. उसने बोलना

शुरू किया, "देखो मोना! मेरे खिलाफ शिकायत करने आई थी खुद फंस गई हो. मुझे मेरे खिलाफ जाने वाले लोग पसंद नही, तुझे तो मै कोठे की रंडी ही बना देता, पर तेरा बदन मुझे बहुत पसंद है, गदराया बदन. तू ये बता तू रंडी बनना चाहेगी या मेरी रखेल बनना पसंद करेगी." मैने सर झुका कर कहा, "मै शादीशुदा हूं!" उसने कहा, "इससे कोई फर्क नही पड़ता." मैने कहा, "आपको नही पड़ता पर मेरे ससुराल वालो को पड़ेगा." उसने कहा, "नही पड़ेगा, न तेरे खसम को न किसी और को." मैने थोड़ी देर सोचा और कहा, "मुझे क्या क्या करना पड़ेगा." उसने मुस्कुरा कर कहा, "मेरी प्यास बुझानी पड़ेगी." मैने सर उठा कर कहा, "बस." वो हंसा और बोला, "नही! ये तो अव्वल होगा, और भी हैं." मैने पुछा, "क्या क्या?" उसने कहा, "मेरे यहां १५ दिन मे एक बार पार्टी होती है. बस १० - १५ लोगो की, उसमे तू सब परोसेगी, 'बिना कपड़ो के.' और मै अगर कहूंगा तो ही २-४ तेरी चुत का मजा ले लेंगे." मैने कुछ नही कहा तो उसने आगे कहा, "मेरे बहुत से लोगो से परिचय है, महीने दो महीने मे एक बार ४-५ लोगो के साथ मेरे किसी भी फार्म हाऊस मे उनके साथ जाना और वो लोग तेरे बदन से २-३ दिन लगातार अपनी प्यास बुझायेगे." मै सर झुकाई रही तो उसने आगे कहा, "मैने यहां एक साईबर कैफे खोल रखा है. वहां के सबसे उपरी मंजिल पर मेरे खास लोग जाते है. तूने कम्प्यूटर पढ़ा हुआ है, डेली ७-११ वहां जाना और मेरे खास लोगो को अगल क्म्प्यूटर चलाने मे दिक्कत होती है तो मदद कर देना. पर याद रखना उस टाईम तेरे कमर के उपर कुछ नही होगा. लोग छुना चाहेंगे तो मना नही करोगी. और कभी कभी वहीं कोने मे बने कमरे में कुछ लोगो की प्यास बुझा देना. मेरा साईबर कैफे तीनो लोग चलाते है, उनको भी कभी कभी अपनी जवानी चखा देना. मै हर एक बात के लिए पहले से बता दूंगा." मैने उसकी तरफ देखते हुए कहा, "इससे अच्छा तो रंडी होना है." उसने कहा, "रंडी बनेगी तो दिन मे १५-२० लोग तेरी चुत का भुर्ता बना देगे. बिना रूके लगातार तेरे जिस्म को तब तक नोचेंगे जब तब तेरा जिस्म से सारी जवानी न उतर जाए या तुझे कोई बोमारी न हो जाए. एडस का नाम सुनी है न. वहां से निकलेगी तो तेरे ससुराल वाले तो तुझे अपनाऐंगे नही. मेरे पास रहेगी तो सब कुछ रहेगा तेरे पास." मैने कहा, "मेरे पति का भी तो मेरे बदन पर हक है." उसने आगे कहा, "मुझे पता है कि तेरे पति को माल की कमी नही है. ज्यादातर तो मेरे पास से ही ले जाता है. घर के बाकि लोगो की बोल, तो अगर घर मे तू किसकी और कब प्यास बुझाती है इससे मुझे कोई फर्क नही पड़ता. तू अपने जेठ, नंदोई, या और किसी को खुश करती है इससे मेरे को फर्क नही पड़ता वो तेरा घरेलु मामला है. हां घर से बाहर तू मेरे से पुछे बिना किसी को अपने चुत मे लण्ड घुसाने नही देगी. माह मे तीन बार इसकी भी छुट रहेगी पर कोशिश ये करना कि मुझे जानकारी हो. वैसे मुझे पता चल जाऐगा पर तू बता देगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा."

उसने आगे कहा, "तू सोच ले क्या करना है." मुझे फैसले पर आने में ३० मिनट लगे. मैने मन ही मन सोचा कि अभी तो बात मानने के इलावा कोई चारा नही है. बाद मे बाहर निकलने का रास्ता ढूढगी. सो मैने हां कर दी.

उसने इंस्पेक्टर को आवाज लगाई, वो अंदर आया तो उसने उसे कहा कि मै इसकी जमानत लेता हूं. इंस्पेक्टर ने कहा, "जनाब, मै सब सबूत आपको दे देता हूं. पर मेरा इनाम." उसने कहा, "क्या चाहिए?" इंस्पेक्टर बोला, "जनाब आज रात इसे यहीं छोड़ दिजिए, रात मे तबीयत से इसका बदन नोच लेगे." मैने डर से उसकी तरफ देखा तो वो बोला, "आज नहीं, आज के लिए काफी है, किसी और को भेज दुंगा आज. अगर इसे पाने की तबीयत करे तो हवेली पर आ जाना." इसके बाद मुझे कपड़े दिए गये और मै तैयार हो गई. डी.वी.एस.सी खुद मुझे घर छोड़ने आये. मै घर मे घुसी तो किसी ने कुछ नही कहा और मै सीधे अपने कमरे मे जा कर सो गई.

रात को जेठानी जी उठाने आई. मै उठ कर हाथ मुंह धो कर खाने को पहुंची. आम तौर पर सब खाने पर रहते है पर आज सास-ससुर नही थे. दोनो जेठ दोनो जेठानी और मेरे पति. हम चुपचाप खाने लगे. बीच मेर बड़े जेठ जी बोले, "मोना!" मैने सर उठा कर देखा तो वो बिना मेरी तरफ देखे बोले, "तुम अब डी.वी.एस.सी. की रखेल बन गई हो, कोई शिकायत का मौका मत देना." मै धक रह गई पर बोली कुछ नही तो वो आगे बोले, "तुम्हारी बड़ी जेठानी भी कई साल तक डी.वी.एस.सी. की रखेल रही है, और छोटी जेठानी भी. अभी भी दोनो जाती है पर बहुत कम. तेरी यहां की रिश्तेदार भी कुछ महीनो तक डी.वी.एस.सी. की प्यास बुझाती रही है. घर मे तुम्हे कोई ज्यादा परेशान नही करेगा. बस कभी कभी हम भाई ही तुझे परेशान करेंगे. परेशानी तब होगी जब कोई कार्यक्रम होगा या त्योहार जब बाहर के कुछ खास लोग आऐगे. जिन्हे तुम्हे अपने बदन से खुश करना पड़ेगा." इसके बाद वो चुप हो गये और हम खाना खा कर अपने अपने कमरे मे चले गये.

सुबह सुबह डी.वी. का कॉल आया और उन्होने बताया कि आज शाम को उनके यहां पार्टी है, शाम को ७ बजे गाड़ी आयेगी, रात मे यही रूकना पड़ेगा.जैसा कि अंदेशा था ७ बजे गाड़ी आ कर खड़ी हो गई और न चाहते हुए मुझे गाड़ी मे बैठना पड़ा. ड्राईवर चुपचाप गाड़ी चलाता हुआ सीधे डी.वी.एस.सी. के बंगले मे ले गया. मै उतरी तो डी.वी.एस.सी. ने मेरा स्वागत किया. वो मेरे कमर मे हाथ लगा कर मुझे अंदर किचन मे ले गये. वहां उन्होने कहा, "मोना! पार्टी ८ बजे से चालू होगी, तुम्हे ८:३० से काम चालू करना है." मैने कहा, "क्या करना है मुझे?" वो मुस्कुराए और बोले, "बताया तो था तेरे को, तुझे नाश्ता और

ड्रींक्स सर्व करना है. वेटर की तरह, बस तेरे बदन पर कपड़े नही रहेंगे. लोग तेरे बदन को छुऐंगे पर कुछ ज्यादा नही करेंगे. रात मे सब के जाने के बाद कुछ लोग तेरे बदन का मजा लेंगे." मैने सर हिला दिया. वो मुझे वही छोड़ कर बाहर चले गये. उनके जाने के बाद एक नौकर आया और फ्रीज से सामान निकाल कर ट्रे मे सजाने लगा. मै वही साईड मे बैठ गई और सोचती रही. तभी डी.वी.एस.सी. अंदर आये और बोले, "मोना! क्या कर रही हो, टाईम देखो." मैने टाईम देखा तो ८:२५ हो रहे थे, मैने उनकी तरफ देखा तो बोले, "जल्दी से कपड़े उतारो और सामान लेकर लॉन मे आना."

उनके जाते ही मैने अनमने मन से कपड़े उतारे और वही पर रखे एक जुते पहने. मैने बाल को जुडा बना कर बांधा और सीधे एक ट्रे उठाई जिसमे शराब की ग्लास रखे थे. उस ट्रे को लेकर मै लॉन मे पहुंची. लॉन मे पहुंची तो देखा की लगभग २५ आदमियो को जमावड़ा है. मैने ट्रे से अपने स्तनो को छुपाने की कोशिश की जब एक नौकर आया और ट्रे को मेरे पेट के सीध मे लाकर बोला, "आप इसे ऐसे पकड़िये." मैने वैसे ही ट्रे पकड़ा और लोगो के करीब आ गई. जैसे ही सबकी नजर पड़ी सब टकटकी लगाये मुझे ही देख रहे थे. मै चलते हुए एक आदमी के पास पहुंची और उसके पास खड़ी हो गई. उस आदमी ने ग्लास उठाने के बजाय मेरे दोनो स्तनो को पकड़ लिया और मसलने लगा. मुझे पता था कि ऐसा होगा इसलिए मैने कोई प्रतिक्रिया नही की. उसने दो मिनट तक मेरे स्तनो को सहलाया और फिर एक ग्लास उठा लिया. एक एक करके मै सब के पास गई और किसी ने मेरे स्तनो को सहलाया, किसी ने मसला, किसी ने चुत्तड़ो को सहलाया. आखिर मे डी.वी.एस.सी. के पास पहुंची. वो चार लोगो से साथ एक सोफा मे बैठे थे. मैने गलास दिया तो सब ने बिना कुछ किये एक एक ग्लास उठा लिया. ट्रे खाली हो गया था तो डी.वी.एस.सी. ने कहा, "ट्रे साईड मे रख दे और यही रूक." मैने ट्रे साईड मे रख कर खड़ी हो गई. एक आदमी ने पुछा, "ये नई माल कौन है." डी.वी.एस.सी. ने कहा, "अरे अपनी कृष्ण रंजन की जोरू है." उसी आदमी ने कहा, "कसम से कृष्ण रंजन के खानदान मे एक से बढ़ कर एक मलाईदार माल आते है. उसकी बड़ी भाभी भी जोरदार आईटम थी, साली पूरी रांड थी एक बार मे दस दस मर्दो को झेल लेती थी और उफ तक नही निकलता था मुंह से. छोटी भाभी भी और मलाईदार माल थी पर साली चार मे ही टांए टांए फिस हो जाती थी." तभी एक दूसरे आदमी ने कहा, "तू बहुत बाद मे आया है इसलिए तू उसकी दोनो बहनो से नही मिला है. उसकी बड़ी बहन को अगर चख लेता तो सारी मलाई भूल जाता. मुझे तो इतनी भा गई थी कि १ हफते के लिए घर ले गया था और जी भर कर मलाई उतारी उसकी." तभी तीसरे ने कहा, "तुम दोनो उसकी छोटी बहन से नही मिलो हो लगता है. साली दिखती तो मासूम

थी पर जब लण्ड लेना शुरू करती थी तो लोग गिनती भूल जाते थे." डी.वी.एस.सी. बोले, "कहां पुरानी बात ले कर बैठ गये, अभी सामने जो है उसे देखो परखो." सब ने सर हिला दिया.

एक आदमी ने मुझे इशारे के पास बुलाया और जैसे ही मै पास पहुंची उसने मुझे खींच कर अपनी गोद मे बिठा लिया. वो मेरे स्तनो और जांघो से खेलने लगा. जब उसका मन भर गया किसी और ने मुझे अपनी जांघो पर बैठा लिया. ये सिलसिला चलता रहा जब तक पार्टी खतम नही हो गई. आखिर मे यही पांचो लोग बजे. एक ने कहा, "साहब माल तो जोरदार है पर चुसती है या नही." डी.वी.एस.सी. ने कहा, "अंदर चलते है और देख लेते है." सब उठकर और अंदर ड्राईंग रूम मे आ गये. मै भी पीछे पीछे आ गई. सब ने अपने अपने कपड़े उतारे और नंगे ही सोफा पर बैठ गये और मुझे देखने लगे. डी.वी.एस.सी. ने कहा, "मोना एक एक करके सबके लण्ड को चुस कर पानी निकालो. मै चुपचाप एक आदमी के सामने घुटनो के बल बैठ गई और उसके लण्ड को मुंह मे लेकर चुसने लगी. वो मेरे स्तनो से खेलने लगा. लगभग १५ मिनट बाद उसने मेरे मुंह में पानी छोड़ दिया. एक एक करके मैने सबके लण्ड चुसी और फिर अलग हट गई. सब ३० मिनट तक बाते करते रहे और अपने हाथो से अपने अपने लण्ड को सहलाते रहे. ३० मिनट मे सब के लण्ड तन के खड़े हो गये और डी.वी.एस.सी. ने मुझे एक बेड पर लेटने को कहा, " मै बेड पर लेट गई और एक आदमी मेरे उपर आ गया. उसने मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसाया और धक्के लगाने लगा. वो रूक कर मेरे स्तनो को मसलता, मेरे निप्पल को चुसता, मेरे होठो को चुमता और फिर धक्के लगाने लगता. २० मिनट मे उसने मेरी चुत मे पिच्कारी छोड़ दी और अलग हो गया. उसके हटते ही दूसरा मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया. लगभग सारी रात एक हटता तो दुसरा मेरे उपर सवार हो जाता. किसी ने दो बार किसी ने चार बार मेरी चुत का भुर्ता बनाया. डी.वी.एस.सी. ने भी चार बार मेरे चुत मे पानी छोड़ा. सुबह मुझे एक कमरे मे छोड़ कर सब चले गये. मै दोपहर तक सोती रही फिर उठी और नहा कर तैयार हो गई और घर आ गई. घर आकर भी मै रात तक सोती रही. खाना खाने के टाईम पर मुझे मेरे पति न उठाया और बताया कि खाना कमरे मे ही लगा दिये है. मैने उठ कर खाना खाया और फिर सो गई.

लगभग एक हफ्ते तक न तो डी.वी.एस.सी. काल आया न घर वालो ने मुझे डिस्टर्ब किया. मै ज्यादातर आराम ही करती थी, घर के काम करने को मुझे कोई नही कहता था. एक दिन डी.वी.एस.सी. का काल आया और उन्होने मुझे साईबर कैफे जाना शुरू करने को कहा. ये भी कहा कि शाम को वो खुद मुझे साईबर कैफे ले जायेंगे और सब से मिलवा कर काम समझा देंगे. शाम को ६:३० पर वो खुद मुझे लेने आये और मुझे लेकर साईबर कैफे पहुंचे. साईबर कैफे तीन मंजिला था, पहले मंजिल मे एक आलिशान

आफिस भी था, सो हम आफिस मे जा कर बैठ गये. उन्होने काल करके किसी को बुलाया और २ मिनट बाद तीन लोग आ गये. उन्होने सब से मिलवाया. उस साईबर कैफे का मालिक ओम प्रकाश भारत था जिसे सब पिन्टू बोलते थे. उसका इंजिनियर दुशयंत टोप्पो था जिसे सब दुष्ट बोलते थे और एक काम चलाऊ अटेन्डेन्ट था जिसका नाम सन्दीप महतो था. उन्होने बताया कि साईबर कैफे तीन मंजिल पर है, नीचे मंजिल मे आम ग्राहक आते है, पहली मंजिल पर बहुत से कैबिन थे जिसमे सिर्फ जोड़े आते थे, कालेज के लड़के लड़कियां ज्यादातर, कैबिन होने के वजह से अंदर बहुत कुछ करते है वो लोग और दुशयंत से सब मे कैमरा लगा के रखा है और वो उनकी रिकार्डिंग करता रहता है. सबसे उपरी मंजिल कर डी.वी.एस.सी. के खास ग्राहक आते है जहां मुझे रहना है और उन सब की हैल्प करनी है.

इतना कह कर वो मुझे लेकर सब से उपरी मंजिल पर आ गये. पिन्टू भी साथ मे था. उसने साईड मे एक अलमारी से एक ड्रेस निकाला और मुझे एक कमरा दिखा कर कहा कि चेन्ज कर लो. मै कमरे मे घुस कर देखा तो पाया कि कमरा ४ बटा ७ फीट का था और अंदर एक बैड रखा था. वहां मैने कपड़े उतारे ही थे की डी.वी.एस.सी. अंदर आ गये. मैने कुछ नही कहा पर उन्होने मुझे कहा, "मोना! ब्रा पैन्टी भी उतार दो." मैने एक बार उन्हे देखा और फिर जैसा बोल रहे थे वैसा ही किया. मैने ड्रेस देखा तो एक स्कर्ट थी, मैने उसे पहन तो पाया कि वो घुटनो से काफी उपर तक थी शायद पूरी स्कर्ट की लम्बाई १२ इंच से ज्यादा न हो. फिर मैने एक समर कोर्ट देखा जो फुल बांह की थी और सामने चेन लगा था. मैने उसे पहन लिया और डी.वी.एस.सी. के साथ बाहर आ गई. बाहर कोने मे पिन्टू अपने डेस्क पर बैठा था सो मै भी उसके बगल मे बैठ गई. पिन्टू ने मुझे देखा और कहा, "मैडम ऐसे नही, यहां किसी और ढंग से बैठा जाता है." मैने उसे देखा तो उसने डी.वी.एस.सी. को देखा. डी.वी.एस.सी. ने हलके से सर हिला दिया. पिन्टू ने मेरे समर कोर्ट का चेन खोला और उसे बाहर निकाल दिया, मै अब सिर्फ स्कर्ट मे थी बस. डी.वी.एस.सी. निकलने लगे और बोल गये कि पिन्टू से सब समझ लेना. उनके जाने के बाद पिन्टू ने कहा, "जितने लोग अभी आयेगे उनको खड़े होकर नमसते करना. और फिर हाथ निचे कर लेना." मैने सर हिला दिया. ७ बजे से बाद एक एक करके लोग आने लगे. मै सब को उठ कर नमसते करती फिर हाथ निचे कर लेती, सब रूक कर कुछ देर मुझे निहारते फिर जा कर कम्पयूटर पर बैठ जाते. सारे सिस्टम ओपन थे. बीच मे कोई भी परदा नही था. लगभग १५ लोग आकर बैठ गये ३० मिनट मे, आते समय सबने अलग अलग रंग के कार्ड दिये थे जिसे पिन्टू ने नोट किया था. सब अपने अपने काम मे मश्गूल हो गये. पिन्टू ने मुझसे कहा, "मैडम १,३ और ६ नम्बर मे जो बैठे है वो आपको इधर उधर हाथ लगाएंगे. ९ और १५ नम्बर वाले कुछ ज्यादा अच्छे से आपके बदन से खेलेंगे. कोई भी प्रतिक्रिया मत

किजिएगा. १२ नम्बर वाले के पास स्पेशल परमिशन है, वो जो बोले बिना झिझके वैसा ही किजियेगा. डरिये मत वो ज्यादा परेशान नही करेगा." मैने सर हिला दिया और चुप चाप बैठी रही.

लगभग ५ मिनट बाद १ नम्बर वाले ने बुलाया. मै उसके पास गई और उसने प्राबलम बताया. मैने अपना हाथ टेबल पर रख कर उसकी प्राबलम देखने लगी. तभी मैने महसूस किया कि वो मेरे स्कर्ट मे हाथ डाल कर मेरे चुत्तड़ो को सहला रहा है. मैने कोई प्रतिक्रिया नही कि और उसका प्राबलम साल्व करती रही. उसकी प्राबलम साल्व हो गई और मै वापस अपने कुर्सी तक आ गई. अगले १.५ घंटे तक वो तीनो मुझे बार बार बुलाते और मेरे चुत्तड़ो को सहलाते जब तक मै उनकी मशीन की प्राबलम ठीक करती. १.५ घंटे के बाद १५ नम्बर वाले ने इशारा किया. पिन्टू बोला, "मैडम समभल कर खास कस्टमर है." मै उसके पास गई और उसकी प्राबलम ठीक करने लगी. मुझे ताजुब हुआ कि जितने देर मैने उसका मशीन ठीक किया उसने कुछ भी गलत हरकत नही की. जब जाने लगी तो उसने मुझे रोका और मेरे दोनो स्तनो को पकड़ लिया और जोर जोर से मसलने लगा. फिर उसने मेरे चुत मे उंगली डाल दी और मेरे निप्पल चुसता रहा. दो मिनट बाद मुझे छोड़ा और मै वापस आकर बैठ गई. १ घन्टे मे तीन तीन बार दोनो ने मुझे बुलाया और यही किया. अब लगभग १० बज गये थे, जब १९ नम्बर वाले ने मुझे बुलाया. मै उस तक गई और प्राबलम पुछा. उसने कहा कि कोई प्राबलम नही है सिस्टम मे. मैने पुछा कि फिर मुझे क्यो बुलाया है. उसने अपनी कुर्सी पिछे सरकाई और कहा, "अंदर घुसो जहां मै पैर रखता हूं, मुंह बाहर की तरफ रखना." मैने पिन्टू कि तरफ देखा तो उसने इशारे से कहा कि सब करते जाऊं. मै घुटनो बल बैठ कर अंदर घुस गई. वो अपनी कुर्सी को वापस अंदर ले आया और मेरे दोनो बगल मे अपने पैर लगा दिया. मै उसके लोगो जांघो के बीच मे थी. उसने अपनी पैंट कि जिप खोली और अपना लण्ड बाहर निकाल कर बोला, "अच्छे से चुसना." मैने उसका लण्ड पकड़ कर मुंह मे डाला और चुसने लगी. वो कुछ देर तक शांत रहा फिर मेरे स्तनो को पकड़ कर खेलने लगा. मै लगातार उसका लण्ड चुसती रही और १५ मिनट बाद उसने मेरे मुंह मे ही अपना सारा पानी छोड़ दिया. मैने बगल मे एक डस्टबिन देखा और उसमे सब उगल दिया. वो फिर कुर्सी खसका कर मुझे निकलने को बोला और मै निकल कर वापस अपने कुर्सी पर आकर बैठ गई.

उसके बाद फिर किसी ने मुझे नही बुलाया. और मै बैठी रही बस. ११ बजने मे दस मिनट बाकि था जब एक अधेड़ उमर का आदमी आया और पिन्टू को एक कार्ड दिया. पिन्टू ने कार्ड देखा और कहा, "पर सर कैफे बंद करने का टाईम हो गया है." उसने रूखे अंदाज मे कहा, "तो मै क्या करूं, अपने बास से बात कर लो." पिन्टू ने फोन किया और किसी से बात करने लगा. थोड़ी देर बाद उसने एक साईड मे रखे

चेयर पर उसे बैठने का इशारा किया. वो बैठ गया और मुझे घूरने लगा. पिन्टू ने कहा, "सर अभी तो सिस्टम खाली नही है १० मिनट लगेगा." वो कुछ नही बोला इस बारे मे पर पिन्टू से पुछा, "यही रहेंगी अब से." पिन्टू ने सर हिला दिया. उसने कहा, "काफी जोरदार है. अब माहौल अच्छा रहेगा. मेरा भी आना जाना बढ़ जायेगा." पिन्टू ने सर हिला दिया. ११ बजे सारे सिस्टम खाली हो गये और सब निचे उतर गये. वो आदमी एक सिस्टम पर बैठ गया. सब के जाने के बाद निचे के भी सिस्टम बंद होने लगे. उस आदमी ने इशारा किया तो मै उठी पर जैसे ही जाने को हुई तो पिन्टू ने कहा, "स्कर्ट उतार दो." मैने उसे एक बार देखा फिर स्कर्ट उतार दी और बिल्कुल नंगी होकर उसके पास गई. मैने उससे पुछा, "क्या प्राबलम है?" उसने कहा, "कुछ नही, अकेला बैठा हूं तुम भी यही बैठो." मैने एक चेयर खींचा तो उसने कहा, "अरे मेरी गोद मे बैठ जा." मै उसके गोद मे बैठ गई और वो एक हाथ से मेरे जिस्म को महसूस कर रहा था और दूसरे हाथ से सिस्टम यूज कर रहा था. लगभग १५ मिनट बाद उसने सिस्टम बंद कर दिया.

वो मुझे उठने को बोला और खुद भी उठा. मुझे कमर से पकड़ा और साथ मे चलते हुए आगे आया. पिन्टू झट से उठा और उस कमरे मे जिसमे मैने कपड़े बदले थे, के दरवाजे तक आया और दरवाजा खोल कर खड़ा हो गया. वो मेरे साथ दरवाजे तक आया और मुझे अंदर की तरफ घकेला. पिन्टू ने उसके कहा, "सर आपका, समय अच्छा गुजरे. सर पर जल्दी किजीएगा, समय का ध्यान रखियेगा." उसने सर हिलाया और उसने पीछे से दरवाजा बंद कर लिया. मुझे अंदाजा था कि मुझे किसलिए अंदर लाया है वो.सो उसके कुछ बोलने से पहले ही मै बिस्तर पर लेट गई और टांगे फैला ली. वो कपड़े उतार कर बिस्तर पर आया और मेरे चुत मे अपना लण्ड डाल कर दो मिनट धक्के लगाता रहा. फिर अचानक अपना लण्ड निकाल कर बाहर चला गया. उसके जाने से मुझे ताजुब हुआ और मै कोहनी के बल उठ कर बैठ गई. दो मिनट बाद पिन्टू अंदर आया, उसने मेरे कान मे कुछ कहा और बाहर चला गया. उसके जाने के बाद वो आदमी फिर अंदर आया और दोबारा बिस्तर पर चढ़ कर मेरी चुत मे अपना लण्ड डाल दिया. इस बार मैने उसे कमर के आस पास अपनी टांगे लपेट ली और वो धक्के लगाने लगा. मैने उसके लगे मे अपनी बांहे डाल दी और उसे रह रह कर अपने स्तनो के निप्पल तक खींचती कि वो निप्पल चूस सके. मै मुंह से ऐसी आवाजे निकाल रही थी कि लगे मुझे बहुत मजा आ रहा था. वो बहुत तेजी से धक्के लगाता रहा और एक चरम पर पहुंच कर ढह गया. उसके अपना लण्ड निकाला और कपड़े पहन कर बाहर निकल गया. उसके जाने के बाद पिन्टू अंदर आया और मुझे एक कपड़ा दिया जिस से मैने खुद को साफ किया. फिर मुझे मेरे कपड़े दिये और कपड़े पहनने के बाद उसने मुझे घर छोड़ दिया.

रात मे मै तो सो गया पर मेरे दिमाग मे यही खयाल आ रहा था कि यहां से निकलूं कैसे. मैने डेली साईबर कैफे जाना शुरू किया. पर मेरी चुत का स्वाद हफ्ते मे सिर्फ दो बार ही कोई उठाता था. कभी एक आदमी कभी दो लोग एक साथ और कभी कभी ३ लोग एक साथ. इस से ज्यादा कभी नही रहे. मैने पुराने फ्रेंडस के नम्बर से एक फ्रेंड का नाम निकाला जो इंदौर मे रहती थी. मैने उसे काल करके कहा कि उसके पास रहने की जगह मिल सकती है कुछ दिनो के लिए, उसने कहा कि मिल सकती और मैं आ जाऊं. सो एक दिन सुबह सुबह बिना सामान लिए मै घर से निकली और बस पकड़ कर सीधे इंदौर को निकल गई. रासते मे बस छोड़ कर मैने ट्रेन पकड़ी और ट्रेन छोड़ कर फिर बस पकड़ी और २४ घंटे बाद मैं इंदौर पहुंच गई. मै बस स्टैण्ड से बाहर निकली ही थी कि पिन्टू सामने खड़ा था. उसने सफारी का गेट खोला और मै डर से बिना कुछ बोले ही गाड़ी मे बैठ गई. वहां से सीधे एयरपोर्ट और वहा से वापस यही. मुझे लेकर वो सीधे डी.वी.सी.सी. की हवेली पर ले गया. डी.वी.सी.सी. ने मुझे प्यार से गले लगाया और कहा, "तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो, पर तुम्हे मुझसे डर नही लगता, है न. अब लगेगा." वो मुझे लेकर एक कमरे मे आ गये और मुझे कपड़े उतारने को बोले. मै डर से कपड़े उतार कर नंगी खड़ी हो गई. उन्होने मुझे बिस्तर पर लेटने को कहा तो मै बिना सवाल किये बिस्तर पर लेट गई. उन्होने पिन्टू को इशारा किया और पिन्टू ने चारो पायो से एक एक रस्सी निकाली और मेरे दोनो हाथ और पैर उन रस्सीयो से बांध दी. उसके ऐसा करते ही कमरे मे १० आदमी घुसे और कपड़े उतारने लगे. उनका मकसद समझते ही मेरे तो छक्के छुट गये. एक आदमी मेरे उपर चढ़ गया और मेरी चुत मे अपना लण्ड डाल कर धक्के लगाने लगा. वो मेरे स्तनो को मसल रहा था और मौका लगते ही मेरे स्तनो पर दांत भी गड़ा देता. वो तेजी से धक्के लगाता रहा और चरम पर पहुंच कर उसने पानी छोड़ दिया. उसके अलग हटते ही अगला मेरे उपर चढ़ गया और मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा कर धक्के लगाने लगा. एक क्रम से एक उतरता तो दूसरा उसकी जगह ले लेता. ६ लोगो के बाद मेरे जिस्म ने बर्दाशत की हदे पार कर दी. मुझे दर्द होने लगा. मै प्रतिरोध करने लगी पर कोई रूकने का नाम ही नही ले रहा था. नौवे के बाद तो हर एक धक्के मे चीखे निकलने लगी पर किसी को रहम नही आया. जब दस पूरे हो गये तो दसो निकल गये कमरे से और दस नये लोग कमरे मे आ गये. उनको देखते ही मैने डी.वी.सी.सी. से मिन्नत करने लगी. डी.वी.सी.सी. ने मुझसे कहा कि फिर मै भागने की कोशिश करूंगी. मैने न कह दिया, उन्होने विश्वास दिलाने को कहा तो दुनिया भर की सारी कसमे खाई मैने, हर तरह से यकीन दिलाया, तब जाकर माने. मुझे खोला, डॉकटर से दिखाया और मुझे एक हफ्ते का रेस्ट दे दिया.

मुझे एक हफ्ते लगे रिकवर करने में और उसके बाद डेली साईबर कैफे. न कोई पार्टी न कुछ और. दो महीने ऐसे ही गुजर गये.

दो दिन बाद दीपावली थी. घर मे जोर शोर से तैयारी चल रही थी. मुझे कैफे से छुट्टी मिल गई थी दीपावली के दिन के लिए बस. जैसे तैसे दीपावली आ गई. मै सुबह से नहा धो कर मैक्सी पहन कर आंगन मे बैठी थी. लगभग ११ बजे मकरन और राजेश आ गये और सीधे आंगन मे आ पर मेरे अगल बगल बैठ गये. वो ओग मुझसे बात करने लगे और भद्दे मजाक करने लगे. मकरन ने कहा, "क्या बात है मोना जी अंदर कुछ पहने है या नही." मैने धीरे से कहा, "जी पहनी हूं." राजेश ने कहा, "दिखाओ." मैने उसकी तरफ गुस्से देखा तो मकरन ने खड़े होकर मेरे मैक्सी से बटन खोलना शुरू कर दिया. मै उसका हाथ पकड़ी तो राजेश ने मैक्सी के बटन खोलना शुरू कर दिया. मै दोनो पर चिल्ला रही थी जब बड़ी जेठानी जी आंगन मे आई. वो मेरे पास आई और मुझसे बोली, "मोना! बदतमजी नही. दोनो का हाथ छोड़ो." मैने दोनो का हाथ छोड़ा ही था कि दोनो ने दो मिनट मे मेरी मैक्सी के बटन खोल दिये. और अलग करने लगे. मैक्सी के अलग होते थी मै नंगी रह गई. जेठानी जी ने कहा, "मोना, दोनो को जो करना है करने देना, चिल्लाना मत अब." इतना कह कर वो चली गई. मै न कुछ बोल पा रही थी एक दम ठगी सी बैठी थी और दोनो मेरे स्तनो से खेल रहे थे. दोनो मेरे निप्पल को चुसने लगे और मै चुपचाप बैठी रही. जब संतुष्ट हो गये तो मेरे बदन को चुमने लगे. मुझे जैसा उमीद था कि वो इतने महीनो से मुझे पाने को तड़प रहे है तो शायद ज्यादा बर्दाशन न कर पाये. सो दोनो ने जल्दी जल्दी अपने कपड़े खोले और मुझे आंगन के बीच मे ले आये. दोनो ने अपने अपने कपड़े उतारे और मेरी टांगे फैला दी. मुझे समझ नही आ रहा था कि दोनो करना क्या चाहते है. मकरन ने मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया और मेरी जांघो पर पकड़ लिया. तभी राजेश ने मेरी गांड मे अपना लण्ड घुसाना शुरू किया. मुझे दर्द तो हो रहा था पर उतना नही वैसे भी उसने शायद तेल लगाया हुआ था. उसका लण्ड पूरी तरह से अंदर घुस गया. राजेश ने पीछे से मेरे दोनो स्तनो को पकड़ लिया और दोनो एक साथ धक्के लगाने लगे. दोनो अपना लण्ड एक साथ बाहर खीचते और एक साथ अंदर घुसाते. बीच मे राजेश ने कस कर मेरे स्तनो को दबाया तो मैने दर्द से अपना सर उपर की तरफ फेंका. इसी पल मकरन ने मेरे ठोडी पर चुम लिया. ये नया तरह का अनुभव था मेरे लिए. दोनो बीच मे थोड़ा ठहरते थे और मकरन मेरे होठो को चुमने लगता था और राजेश मेरे गले को. दोनो १० मिनट तक वैसे ही धक्के लगाते रहे और फिर मकरन पीछे चला गया और राजेश आगे आ गया. दोनो जगह बदल कर और १० मिनट तक धक्के

लगाते रहे और दोनो ने लगभग एक साथ मेरे चुत और गांड़ गीली कर दी और अलग होकर कपड़े पहनने लगे. मैने भी खुद को साफ किया और मैक्सी पहन कर कमरे मे आ गई और सो गई.

शाम को मेरे पति ने मुझे उठाया और नहाने को कहा. मै नहा कर आई तो जैसे ही कपड़े पहनने गई तो उन्होने मुझे रोका और कहा, "मेरे कुछ खास लोग आ रहे है. तुम नाश्ता लेकर आ जाना. और हां, बदन पर कुछ भी मत पहनना." मैने झटके से कहा, "एक दम नंगी आ जांऊ क्या?" उन्होने कहा, "४ लोग रहेंगे बस, और डी.वी.एस.सी के पार्टी मे तो इससे ज्यादा लोग रहते है और तेरे साईबर मे भी तो....." मैने बहस करना जरूरी नही समझा और सर हिला दी. मैने बाल मे कंघी की और सीधे किचन मे चली गई, बिना कुछ पहने. जैसा कि मुझे लगा था, घर मे कोई नही था. मैने एक नाश्ते की प्लेट उठाई और सामने वाले रूम को चली गई. जैसे ही गेट तक पहुंची शराब की गंध आने लगी. मै धीरे से अंदर घुसी तो पाया कि ये वही चारो है जो होली मे मेरे बदन से खेले थे. एक ने कहा, "किशन आज तो दीपावली है आज तो नही रोकोगे न?" मेरे पति ने हंस कर कहा, "नही यार, आज सब कुछ कर सकते हो." मैने जैसे ही नाश्ता रखा चारो कूद कर मेरे उपर झपटे और मुझे एक साईड मे रखे बिस्तर कर गिरा दिया और मेरे बदन से खेलने लगे.मेरे पति बगल मे बैठे थे और दारू पी रहे थे पर वो ऐसे बैठे थे कि कमरे मे कुछ हो ही नही रहा था. जब सब संतुष्ट हुए तो मुझे उठा कर घोड़ी बना दिया और मेरे चुत मे एक ने लण्ड घुसा दिया और दो लेटे लेटे मेरे स्तनो को चुसने लगे. एक ने मेरे मुंह मे अपना लण्ड घुसा दिया और दोनो मुझे दोनो तरफ से धक्के लगाने लगे. अपने चरम पर पहुंच कर दोनो ने एक साथ पानी छोड़ दिया. उनके अलग हटते ही बाकि दोनो ने उनकी जगह ले ली और फिर से वही क्रम चालू हो गया. चारो ने लगभग दो दो बार मेरे जिस्म को भोगा फिर मुझे छोड़कर कपड़े पहनने लगे. मै उठ कर सीधे बाथरूम जाकर पहले नहाई और फिर कमरे मे जाकर सो गई.

अगले दिन से फिर साईबर कैफे का डेली रूटीन चालू हो गया. लगभग एक हफ्ते बाद डी.वी.एस.सी. का काल आया. उन्होने कहा कि मुझे ३ दिन के लिए बाहर जाना पड़ेगा. उन्होने बताया कि उनके ३ खास लोग है जिनके साथ मुझे शहर से १०० कि.मी. दूर एक फार्म हाऊस पर जाना है. वहां तीन दिन रूकना है उन तीनो के साथ फिर वापसी. मना तो कर ही नही सकती थी सो अगले दिन सुबह सुबह मैने कुछ कपड़े बैग मे डाले और घर के बाहर खड़ी हो गई. एक बुलैरो आ कर सामने मे रूकी और पिन्टू बाहर निकला. उसने मुझे गाड़ी मे चढ़ने को कहा. मै जैसे ही अंदर बैठी मैने अंदर ड्राईवर को मिला कर चार लोगो को देखा. पिन्टू ने मुझे बताया कि मुझे इन लोगो के साथ ही जाना है और वो ऑटो से घर चला जायेगा. उसके इतना बोलते ही गाड़ी चल पड़ी. शहर से निकलने के बाद एक ने मेरा बैग देख कर कहा,

"इसमे क्या है." मैने कहा, "तीन दिनो के लिए कुछ कपड़े है." वो हंसा और बोला, "तीन दिन तक कपड़े पहन ही नही पाओगी." मै जानती थी कि उसका क्या मतलब था पर मैने कुछ कहा नही.

लगभग २ घन्टे के ड्राईव के बाद हम एक फार्म हाऊस पर पहुंचे. मैने जिन्दगी मे कभी फार्म हाऊस नही देखा था. हम उतरे तो एक आदमी ने मुझसे कहा, "चलो तुम्हे जगह दिखाता हूं." वो एक आलिशान बंगला था, जिसके आस पास दूर दूर तक कोई और घर नही था. बाऊन्डरी बहुत बड़ा था और पेड़ पौधे और तरतीब से घास लगी थी सब तरफ. बंगले के पीछे एक अस्तबल था जिसमे ८ घोड़े थे और एक आदमी था जो उनकी देखरेख करता था. अस्तबल के पास ही कुछ क्वार्टर बने थे, शायद नौकरो के रहने के लिए. बाहर एक दरबान बैठता था और एक माली जो वहां के पेड़ पौधो की देखभाल करता था. अंदर गये तो एक आदमी मिला जो बंगले कि साफ सफाई करता था और खाना भी बनाता था. सब नौकरो की उमर २५ से ३५ के बीच की थी. बगला अंदर से काफी बड़ा था और उपर तीन कमरे थे. नीचे एक हॉल, डाईनिग रूम, लाईब्रेरी और किचन. कहने के लिए रूम कम थे पर उनका व्यास बहुत था. सब अदर आ गये और सोफे पर बैठ गये. दोनो बावर्ची और ड्राईवर अंदर ही थे तो एक ने उन्हे कुछ पैसे दिये और बाहर जाने को कहा. ये भी बोले कि जब जरूरत होगी बुला लेंगे. दोनो सलाम ठोक कर चले गये. मुझे एक ने कहा, "चल अंदर जा और कमरे मे सामान रख के वापस आना." मै कमरे मे जाने लगी तो दूसरे ने कहा, "पूरी बात तो सुन ले." मै रूकी तो वो आगे बोला, "वापसी मे कपड़े उतार कर आना. अब से तीन दिन तुम कुछ नही पहनोगी. अगर हमारे इलावा कोई आये तो बदन पर एक टावेल लपेट लेना. अंदर टेबल पर एक ग्लास मे दवा है. पी लेना, तीन दिन तक कोई कितना भी अंदर फव्वारा छोड़े तेरा पांव भारी नही होगा." मै सर हिला कर अंदर चली गई. सबसे पहले मैने वही दवा पी और कपड़े उतारने लगी. बिल्कुल नंगी होकर मै वापस कमरे मे आ गई. सब मुझे ही घूरे जा रहे थे. मै सोफे के साईड मे बैठने को हुई तो एक ने कहा, "यहां टेबल पर आकर लेट जा." मै कुछ नही बोली और टेबल पर चुप चाप लेट गई. सब मेरे इर्द गिर्द बैठ कर मेरे बदन से खेलने लगे. मुझे एक ने कहा, "तेरे स्तन बहुत बड़े बड़े है, बहुत मजा आ रहा है." मै चुप चाप रही, सब मेरे बदन से खेल कर संतुष्ट हुए तो अपने अपने कपड़े उतारने लगे. एक टेबल के उपर चढ़ा और मेरी चुत मे लण्ड घुसा कर धक्के लगाने लगा. एक गति से बिना कुछ और किये उसने कुछ देर मे अंदर फव्वारा छोड़ दिया और दूसरे ने उसकी जगह ले ली. कुछ देर बाद वो अपना काम करके अलग हुआ और फिर तीसरा मेरे उपर चढ़ गया और अपना काम मे लग गया. उसे भी ज्यादा देर नही लगा और तीनो संतुष्ट होकर मुझे छोड़ दिये. मै उठी और उसी हालत मे बाथरूम जाकर नहाई.

मै दोपहर तक उनके आस पास ही घुमती रही बिल्कुल नंगी, वो जब भी मेरे पास से गुजरते, मेरे स्तनो को या मेरे चुत्तड़ो को सहला देते, या मुझे बांहो मे लेकर चुम लेते. दोपहर को उन्होने मुझे कमरे मे जाने को कहा और दो घंटे सोने को कहा. मै कमरे मे जा कर सो गई. दो घंटे बाद मुझे गीला लगा तो मैने आंखे खोली. उनमे से एक मेरे उपर लेटा हुआ था और मेरे गले के आसपास चुम रहा था. मेरे उठते ही बोला, "चल खाना खा ले." मै उसके साथ नीचे आई और डाईनिग रूम मे बैठ कर हम सबने खाना खाया. उन लोगो ने कहा कि जाकर मै आराम करू सो मै फिर कमरे मे वापस आ गई और टी वी देखने लगी. शाम तक मै टी वी देखती रही और फिर सो गई.

आठ बजे एक मुझे उठाने आया वो मुझे खाना खाने को चलने को कहा. मै उसी हालत मे उठी और खाना खाने पहुंची. खाना खा कर सब ड्राईंरूम मे ही बैठ गये. इस टाईम पर सब बरमुण्डा मे बैठे थे और कुछ नही पहने थे और मै तो नंगी थी. वो लोग एक सोफा पर बैठ गये और मै साईड मे बैठ गई. सब ने टी वी चालू किया और उस पर कुछ देखने लगे. मैने ध्यान दिया तो पता चला कि वो लोग ब्लू फिल्म देख रहे थे. मै सर झुका कर बैठी थी जब एक ने कहा, "कहां दूर मे बैठी है, मेरे पास आ." मै उठ कर उसके पास गई तो उसने मुझे गोद मे बिठा लिया और मेरे स्तनो से खेलने लगा, वो मेरे कंधो पर और गले पर चुमता भी था और मेरे जांघो के अंदर के तरफ हाथ भी फिराता रहता था. कभी कभी मेरे चुत मे एक या दो उंगली भी घुसा देता था. ३० मिनट तक मेरे बदन से खेलता रहा जब दूसरे ने कहा, "अब मुझे भी मजे लेने दे." और मै उसकी गोद मे बैठ गई. वो भी वैसी ही हरकते कर रहा था और फिल्म देख रहा था. ३० मिनट के बाद मुझे अगले ने अपनी गोद मे ले लिया और मेरे बदन से खेलता रहा. ३० मिनट बाद फिल्म खतम् हो गई और जिसकी गोद मे बैठी थी उसने मुझे बांहो मे उठाया और कमरे की तरफ चल दिया, बाकि पीछे पीछे थे. कमरे मे पहुंच कर उसने मुझे बिस्तर पर लिटाया और सब बिस्तर पर चढ़ गये. एक ने मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा कर धीरे धीरे धक्के लगाना शुरू कर दिया और बाकि दोनो मेरे निप्पल चुसने लगे. जो मुझे धक्के लगा रहा था उसने धक्के तेज कर दिये और कुछ देर बाद मेरे बदन मे अपना बीज छोड़ कर अलग हो गया. उसके हटते ही दूसरे ने उसकी जगह ले ली और धक्के लगाने लगा. उसने भी समान प्रक्रिया की और उसके बाद अगले ने भी. तीनो शांत हो कर मेरे अगल बगल लेट गये और मेरे साथ ही सो गये. तीनो की उमर ३५-४० के बीच मे थी इसलिए इतनी शक्ति नही थी कि दूसरा राऊंड मार सके.

सुबह मै सब से लेट से उठी और नहाने चली गई. फ्रेश होकर नहाई और कमरे मे वापस आ गई. बाल सुखा कर बैठी थी तभी उन मे से एक आया और बोला, "टावेल लपेट ले, नौकर कमरे मे पोछा

लगायेगा." मैने सर हिलाया और उसके जाते ही टावेल स्तनो के उपर से लपेट लिया. पर टावेल की चौड़ाई इतनी कम भी कि बहुत मुश्किल से ही मेरी चुत को ढक रहा था. मै कोने मे खड़ी हो गई और एक नौकर आकर कमरे मे पोछा लगाने लगा, मैने गौर किया कि चोर नजरो से वो मुझे ही देख रहा था और जब पैरो के आस पास था तो टावेल के निचे से मेरी चुत को झांकने की कोशिश कर रहा था. मैने कोई प्रतिक्रिया नही की और वो काम खत्म करके चला गया. दोपहर मे खाना खाने के बाद वो लोग फिर से फिल्म देखने लगे और फिल्म के बाद मुझे सोफे पर ही लिटा कर एक एक करके निपटाने लगे. दरवाजा खुला था और मुझे लगा कि शायद ड्राईवर और माली वहां से झांक रहे है. खैर तीनो जल्दी ही निपट कर मुझे कमरे मे जाने को बोले. मै कमरे मे चली गई और सो गई. रात मे मुझे खाना खाने का मन नही था, सो उनका भी मन नही हुआ और वो लोग दारू पीने लगे. मै पास मे ही बैठी रही. वो लोग दारू पी कर मुझसे बोले, "चल जल्दी से मुंह मे ले ले." मै घुटनो के बल बैठ गई और एक एक करके उनका लण्ड तब तक चूसती रही जब तक वो मेरे मुंह मे ही पानी नही छोड़ दिये. तीनो उठे और मेरे साथ कमरे मे आ गये और मेरे साथ नंगे ही बिस्तर पर सो गये.

लगभग एक घंटे बाद या शायद ज्यादा हो रहा होगा किसी ने दरवाजा खटखटाया, दो तीन बार खटखटाया होगा कि मै और उनमे से एक की नींद खुल गई. उसने मुझसे कहा, "जा! जा कर देख कौन है?" मै हड़बड़ा कर बोली, "मै अकेली?" वो बड़बड़ाया, "साली डरपोक, तू चल मै आता हूं." मै उठी और बाल ठीक करके टावेल लपेट ली और दरवाजा खोलने चल दी. जैसे ही दरवाजा खोला मैने देखा कि ड्राईवर, माली और बावर्ची खड़े थे. मैने ड्राईवर से पुछा कि क्या काम है? उसने पुछा, "मालिक लोग दारू पी के सो रहे है क्या?" मैने सर हिला दिया. अचानक उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा, "तो चल आज रात हमारे लण्ड कि भी प्यास बुझा दे." मुझे धक्का लगा और मै हाथ छुड़ाने लगी. मैने छोड़ने को कहा और ये भी कहा कि मै कम्पलेन कर दूंगी और मै ऐसी वैसी लड़की नही हूं. उसने कहा, "किसी भी टाईप और स्टैण्डर्ड की हो, है तो रंडी ही न, इतने लोगो की प्यास बुझा रही है, दो चार का और बुझा देगी तो घिस तो नही जायेगी तेरी चुत." अचानक उसने मेरा हाथ छोड़ कर टावेल का सिरा पकड़ लिया. टावेल खुल गया और मै एक सिरा पकड़ कर अपने बदन को छुपाने की कोशिश कर रही थी. तभी वो जो मेरे साथ उठा था नीचे आ गया. उसने एक का नाम लेकर कहा, "क्या हो रहा है." उनके बोलने से पहले मैने कहा, "मेरे साथ जबरदस्ती करने की कोशिश कर रहे थे." उसने मुझे देखा और फिर एक से कहा, "कुछ जरूरत रहती है तो मांगा कर, खुद लेगा तो चोरी होगी." सब सर झुका कर खड़े थे तो उसने आगे कहा, "मै तुम लोगो कि बात भी समझता हूं, तुम भी तो मर्द हो, जरूरते है, हमारी वजह से यहां

पड़े हो." सब वैसे ही खड़े रहे जब उसने आगे कहा, "आईंदा ऐसी गलती तो नही होगी न!" सब ने न कहा तो उसने कहा, "हम इसके साथ कल दिन भर रहेंगे. ढंग से इस्तेमाल करना." सब उपर देखने लगे और माली ने पुछा, "साब ले जाये इसको." उसने कहा, "हां ले जाओ, पर नोचना मत इसको." मै हक्की बक्की सी खड़ी थी और वो पलट कर वापस चला गया. सब मुझे देख कर मुस्कुराने लगे और मै टावेल का एक सिरा खड़ी थी.

ड्राईवर बोला, "अब चल!" मैने टावेल लिया और लपेट कर उसके पीछे पीछे चलने लगी. हम लोग अस्तबल मे पहुंचे जहां गार्ड और अस्तबल का देखरेख करने वाला साईस बैठे थे. मुझे देखते ही बोला, "खुद आई है कि लाना पड़ा है." ड्राईवर कुछ नही बोला तो वो आगे बोला, "साब लोग को पता चलेगा तो प्राबलम होगी." ड्राईवर बोला, "साब से पूछ कर लाये है." उसने पुछा, "सच मे?" तीनो ने सर हिला दिया तो उसने कहा, "तब तो रात भर ऐश करेगे इस ऊंची दर्जे की रंडी के साथ, बदन तो दिखा." इतना कह कर उसने मेरे टावेल को खींच लिया. मै दो कोड़ी के लोगो के सामने नंगी हो गई. सब मेरे बदन को निहारने लगे. दो आगे बढ़े और मेरे स्तनो को पकड़ लिये और उसे मसलते और मेरे निप्पल को चुसने लगे. दो मेरे जांघो और चुत्तड़ो को पीछे से पकड़ कर उन्हे चुमने और चाटने लगे. एक मेरे सामने बैठ कर मेरे कमर को पकड़ कर मेरी चुत चाटने लगा. वो लोग जगह बदल बदल कर मेरे बदन से खेल रहे थे. अचानक एक ने कहा, "अबे साईस बिस्तर लगा." साईस हटा और एक बीच अस्तबल मे पैरा का मोटी परत बिछा कर उसपर एक चादर बिछा दिया.

उसने कहा, "हो गया." सब ने मुझे छोड़ा और माली बोला, "चल लेट जा उस पर और पैर फैला ले." मै चुप चाप जा कर लेट गई और जांघे फैला ली. इस बीच सब कपड़े उतारने लगे. सब अपने अपने लण्ड को सहलाते हुए आ गये मेरे पास. दो मेरे अगल बैठ कर मेरे स्तनो से खेलने लगे और एक मेरे सर के पास बैठ कर मेरे होंठो और लगे को चुमने लगे. एक ने अपना लण्ड मेरी चुत मे घुसाया और धक्के लगाने लगा. मुझे पता नही था कि वो कौन है पर धक्के दमदार थे. २० मिनट के बाद उसने मेरे चुत को भिंगा दिया और उसकी जगह किसी और ने ले ली. सब एक एक करके जगह बदल बदल कर मुझे धक्के लगाते रहे और अंदर पानी छोड़ते रहे. एक बार शांत होकर सब एक एक कोना पकड़ कर सो गये. मै भी सो गई. पर रात मे ड्राईवर मेरे उपर दोबारा चढ़ गया और धक्के लगाने लगा. अपने समय से उसने अपनी प्यास बुझाई और जा कर सो गया. रात भर कोई न कोई बारी बारी मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा ही देता. मेरे हिसाब से सब ने ३-३ बार मेरे बदन को रौंडा होगा.

सुबह उठने मे लेट हो गया, मै अस्तबल मे पड़ी थी जब वो आदमी जिसने इजाजत दी थी चिल्लाते हुए आया, "मादरचोदो, अब क्या अपनी रखेल समझ रखे हो उसको." मै उठी और बाकि भी उठ गये. सब कपड़े पहनने लगे. तभी वो अंदर आ गया. उसने मुझसे कहा, "जा बंगले मे." मै लंग्ड़ाते हुए चलने लगी तो उसने कहा, "लगता है सब तुझे अच्छे से निचोड़े है, जा नहा ले और अब हम तुझे शाम को ही कुछ करेंगे." मै वापस आई और नहा कर सो गई.दोपहर देर तक सोती रही जब एक ने मुझे उठाया. मै उठने को हुई तो उसने मुझे रोका और कहा कि वो लोग वही निपटेंगे. मैने टांगे फैला दी और वो लोग एक एक करके निपटने लगे. निपटने के बाद उन्होने तैयार होने को कहा और फिर हम लोग वापस आ गये. मै सीधे घर आ गई.

उसके बाद कई मौके आये जब मुझे कुछ लोगो के साथ बाहर भेजा गया. पर मुझपर ज्यादा भार न पड़े इस बात का खयाल रखा जाता था. हां पर जहां भी जाती थी वहां के नौकर भी कम से कब एक बार मुझे जरूर नोचते थे. आम तौर पर मुझे ज्यादा दूर नही भेजते थे पर कभी दूर भी भेजा जाता था. ऐसे ही मे एक बार मुझे ३ लोगो के साथ बाहर भेजा गया. वहां जो हुआ सो हुआ पर वापसी मे वो लोग एक कम्पार्टमेंट बुक किये हुए थे. मै और वो ३ लोग, उन्होने मुझे कपड़े उतारने को कहा सो मैने कपड़े उतार दिये. और वो लोग मुझे एक एक करके निपटाने लगे. उसके बाद मै एक कोने मे सीट पर बिना कपड़ो के बैठी रही और वो लोग दारू निकाल कर ग्लास मे डाल कर पीने लगे और एक एक सिगरेट जला लिये. ट्रेन मे इन सब चीजो की परमिशन नही होती पर मैने कुछ नही कहा. लगभग २ मिनट के बाद दरवाजा खुला और दो टी टी अंदर घुस गये. मै कोने मे बैठी थी तो शायद ध्यान नही दिये और उन तीनो को चमकाने लगे. एक ने १००० का दो नोट निकाला और दोनो को बढ़ा दिया. दोनो ने पैसे तो नही लिये पर शांत हो गये. तभी एक कि नजर मुझपर पड़ी उसने नोट पकड़ा और दूसरे को कोहनी मारी, तो उसने भी मुझे देखा. दोनो ने फिर एक दूसरे को देखा और एक मेरे बगल मे जबरदस्ती घुसने की कोशिश करने लगे. इस कारण मुझे थोड़ा खस्कना पड़ा और वो मेरे बगल मे बैठ गया और दूसरा मे दूसरे बगल मे बैठ गया. एक ने कहा, "साब लोग यहां तो माहौल जमा कर रखे है. हमे बस कुछ मे टरका रहे है." दोनो ने मेरे एक एक स्तन पकड़ कर मसलना शुरू किया और मेरे कंधो और गले को चुमने लगे. एक ने कहा, "साली कसम से क्या दूध है तेरे, फुटबाल समान, बहुत मजा आ रहा है." उसने आगे कहा, "साब लोग अगर इजाजत हो तो इस माल के साथ कुछ ऐश कर ले?" एक ने कहा, "हां हां शौक से!!!" दोनो उठे और मुझे खींचते हुए बाहर लेकर आये और ट्रेन के दो बोगीयो के बीच के गलियारे मे ले आये. ये ए सी बोगी का आखरी बोगी था इसलिए ये बंद था. एक ने मुझे दीवार से सटाया और

मुझपर अपना पूरा भार डाल कर मेरे बदन से खेलने लगा. दूसरा अपने कपड़े उतार रहा था, कपड़े उतारते ही उसने पहले को हटाया और मेरी चुत मे अपना लण्ड डाल कर धक्के लगाने लगा. लगातार धक्के लगाने के बाद वो पानी छोड़ कर हट गया और दूसरा मुझे भोगने लगा. वो जब हटे तो मै जाने को हुई तो एक बोला, "कहां जानेमन, घुम जा और झुक जा, तेरी गांड़ भी मारनी है." मै रूकी और झुक कर खड़ी हो गई. वो लोग एक एक करके अपना काम करने लगे. अपना काम खत्म किये तो पहले बाथरूम मे जाकर अपने आप को साफ की और फिर वापस आ कर कपड़े पहन कर बैठ गई. स्टेशन आया तो वापस आ गई.

अब तो रूटीन बन गया था, महीने मे एक बार कुछ दिनो के लिए बाहर जाना पड़ता था. बाकि दिन कैफे और कभी कभी डी.वी.एस.सी. के घर जहां डी.वी.एस.सी. रात भर मेरे जिस्म को रौन्दते रहते थे. कभी कभी पार्टी जहां १०-१५ लोगो के सामने मेरी नुमाईश होती और ४-५ मुझे नोचते.

सुबह साईबर कैफे दुष्यंत खोलता था और पिन्टू शाम को ६ बजे से आ कर बैठता था. अगर कुछ काम हो, ज्यादातर चैक पर साईन करवाना होता था तो दुष्यंत पिन्टू के घर चला जाता था. पिन्टू हालाकि शादी शुदा है पर अपनी फैमली को साथ नही रखता. बैचलर टाईप रहता है. हमेशा उसके दोस्त आते जाते रहते थे और पीने का प्रोग्राम भी चलता रहता था. दुष्यंत और संदीप कभी भी उपर के फ्लोर पर नही आते थे उनको पता ही नही था कि उपर होता क्या है. एक दिन मै पिन्टू के साथ बैठी थी जब पिन्टू ने मुझसे कहा, "मैडम, एक बात कहूं, आप बुरा न माने तो." मै सर हिलाया तो उसने कहा, "आप मेरे सामने ही इतने लोगो के साथ सब कुछ करती है, मेरा भी मन करता है कि मै भी आपके साथ वैसे ही करूं, पर हिम्मत ही नही होती. क्या कभी आप कोई इस टाईप का प्रोग्राम बना सकती है." मैने कुछ सोचा फिर उस से पुछा, "डी.वी. को पता चल गया तो?" उसने कहा, "मुझपर डी.वी. का पूरा भरोसा है और मुझे विश्वास है कि उनको नही पता चलेगा." मैने उस से पुछा, "मुझे क्या मिलेगा?" उसने कहा, "जो आप चाहे, जब चाहें." मैने कहा, "मै सोच कर बताऊंगी." दो घन्टे के बाद मैने उसे बुलाया और कहा, "ठीक है मुझे मन्जूर है." उसने कहा, "एक और रिक्वेस्ट थी." मैने उससे पुछा कि क्या है तो उसने कहा, "आप एक बार मे दो तीन लोगो से करवा लेती हो, मैने देखा तो बहुत है पर कभी इस टाईप से किसी के साथ ट्राई नही किया. अगर आप बोले तो यहां मेरे तीन खास फ्रेंड है, मै उनको भी बुला लूं." मैने कहा, "बुला लो, मुझे कोई परेशानी नही." मैने उससे जगह और टाईम पुछा तो उसने कहा, "मेरे घर पर, अकेला रहता हूं, और मेरे फ्रेंड्स मेरे पड़ोसी ही है. आप सुबह दस बजे आ जाईयेगा." मैने ठीक है कहा और फिर घर आ गई.

अगले दिन सुबह १० बजे मै उसके घर पहुंची, उसने मुझे अंदर बुलाया और मेरे लिए चाय नाश्ता लगाया. मैने झटपट अपने कपड़े उतार दिये और नंगी होकर बैठ गई. उसने मुझसे कहा, "मेरे दोस्त आ जाते उसके बाद....." मैने कहा, "पहली बार तो किसी गैर मर्द के सामने नंगी हो नही रही हूं, ये तो मेरे लिए डेली का काम है. तुम्हारे दोस्तो को भी मजा आयेगा." उसने सर हिलाया और काल करने लगा. लगभग १० मिनट बाद तीन लोग कमरे के अंदर घुसे. मै खड़ी हो गई और वो लोग मुझे देखने लगे. पिन्टू ने कहा, "दोस्तो ये है वो जिसके बारे मे मैने रात को बताया था. इनका नाम अंजलि है." उसने मेरा नाम गलत बतायापर मैने कुछ कहा नही, उसके सब दोस्त मुझे देखे जा रहे थे, एक आगे बढ़ा और मुझसे हाथ मिलाया. मैने पिन्टू से कहा, "तुम्हारे सारे दोस्त लल्लू है क्या?" पिन्टू हड़बड़ा कर बोला, "क्यो क्या हुआ." मैने कहा, "एक नंगी लड़की सामने मे खड़ी है जिसके साथ सब मजे लेने आये है, स्तन दबा सकते है, चुत्तड़ सहला सकते है, चुत मे उंगली डाल सकते है, निप्पल चुस सकते है, किस कर सकते है, पर सिर्फ हाथ मिला रहे है." वो आदमी थोड़ा शरमा गया और फौरन ही मेरे एक स्तन को पकड़ कर खेलने लगा. बाकि लोग खड़े थे तो मैने फिर चुटकी ली, "बाकि लोगो को शायद न्यौता देना पड़ेगा. दोनो नीद से जागे और आकर मेरे बदन से खेलने लगे. पिन्टू मेरी शरारत पर मंद मंद मुस्कुरा रहा था. तीनो १० मिनट तक मेरे बदन से खेलते रहे फिर मैने कहा, "अब जो करना है वो करते है." इतना कह कर मै बिस्तर पर जा कर लेट गई और जांघे फैला दी. सब जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगे. नंगे होकर एक ने कहा, "पिन्टू, कॉन्डम है क्या?" मैने उससे कहा, "तुम मे से किसी को एडस है क्या?" सब ने जल्दी से न कहा तो मैने आगे कहा, "मुझे भी नही है. ति फिर कॉन्डम क्यों चाहिए आप लोगो को?" एक ने कहा, "अगर आपको गर्भ रूक गया तो?" मैने कहा, "तो तू शादी करेगा क्या मुझसे?" उसने न कहा तो मैने कहा, "उसकी फिकर तुम को क्यो है? मुझे नही है, आ जाओ और ऐसे ही मजे लो." सब एक दूसरे की शक्ल देख रहे थे और फिर एक बिस्तर पर चढ़ गया और मेरे उपर आ गया. उसने मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसाया और धक्के लगाने लगा. मैने उसके कमर के आस पास पैर लपेट लिया.

अभी ५ मिनट भी नही हुए थे कि अचानक दुष्यंत पता नही कहा से आ गया, शायद गेट बंद करना भूल गये थे इसलिए दुष्यंत सीधा अंदर उसी कमरे मे आ गया. मेरे और पिन्टू के तो छक्के छूट गये पर हमने सिटूएशन सम्भाला. मै बिना उसे भाव दिये उस आदमी का जो मेरे चुत मे धक्के लगा रहा था, उसका साथ दे रही थी. उसे और तेज धक्के लगाने को उकसा रही थी. पिन्टू साईड मे एक सोफे पर बैठ गया और दुष्यंत को सामने बैठने को बोला और उस से काम पुछा. दुष्यंत ने एक चेक निकाला पिन्टू

को साईन करने को बोला. पिन्टू उस चेक के बाबत उससे कई सवाल पुछता रहा, साफ पता चल रहा था कि वो दुष्यंत को जबरदस्ती रोके हुए था. इतने मे उस आदमी ने मेरे चुत मे पानी छोड़ दिया और उसके उठते ही दूसरे ने उसकी जगह ले ली. दुष्यंत चोर नजरो से मेरी ओर देख रहा था पर बोल कुछ नही रहा था. पिन्टू ने चेक साईन कर दिया और उसे रवाना कर दिया. मुझे बाद मे बताया कि हड़बड़ाता तो कम्पलेन करता या ब्लैकमेल, नही तो राजदार बनने की कोशिश करेगा और मुझे पाने की फरमाईस करेगा, और हमारा काम खुशी से करेगा. खैर अब दो निपट चुके थे और तिसरा मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा चुका था.जब वो धक्के लगा रहा था तब तक पिन्टू अपने कपड़े उतार रहा था. मेरे उपर वाला लगातार धक्के लगा रहा था और मै उसके पीठ और चुत्तड़ो को सहला रही थी, जब वो थक के रूकता था तो उसे प्यार से बांहो मे समेटती थी और उसके होंठो को अच्छे से चूम कर प्यार से उसके कान मे बोलती थी, "मेरा प्यारा बच्चा थक गया, रेस्ट कर ले फिर शुरू करना." इससे उसका जोश दुगना हो जाता और वो फिर धक्के लगाने लगता. मुझे बहुत मजा आ रहा था इन सब मे, कारण था कि पहली बार सब मेरे मर्जी से हो रहा था. दोनो जो निपट चुके थे, मेरे बगल मे लेट गये और मेरे निप्पल मुंह मे लेकर चुसने लगे. धक्के लगाने वाले ने मेरी चुत मे पानी छोड़ दिया और खड़ा हो गया. अब पिन्टू कि बारी थी. मैने दोनो को अपने निप्पल से अलग किया और कहा, "थोड़ी देर बाद." पिन्टू मेरे ऊपर लेट गया और मैने उसके कमर के ईर्द गिर्द अपनी टांगे लपेट ली और उसे बांहो मे ले कर उसके होंठ चुसने और काटने लगी. वो छुटने की कोशिश करता तो फिर पकड़ लेती और दोबारा उस पर हावी हो जाती. आखिर मैने उसे छोड़ा तो वो हांफने लगा. मैने जांघे फैलाई और उसे न्योता दिया. उसने जल्दी से मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया और जबरदस्त धक्के लगाने लगा. उसके धक्को से मेरे स्तन पानी भरे गुब्बारो की तरह उछल रहे थे. आखिर लगातार धक्के लगाने के बाद वो मेरी चुत मे पानी छोड़ कर अलग हुआ.

सब एक साथ बैठ कर सिग्रेट पीने लगे. मैने बैग से वैसलीन निकाला और अपने गांड़ मे घुसा कर लगाने लगी. मै भी उसके बगल मे बैठ गई. सब जाने की बात करने लगे तो मैने पुछा, "कहां जाने की तैयारी हो रही है, एक बार मे ही खत्म, एक राऊंड और लगा लो." एक ने जवाब दिया, "लण्ड तो सिकुड़ गये है, अब क्या करेंगे." मै घुटनो के बल बैठ गई एक रूमाल से उसका लण्ड पोछी और मुंह मे डाल कर चुसने लगी दो मिनट भी नही लगा और उसका लण्ड टनटना गया. मैने फौरन ही दूसरे का लण्ड चुसने लगी और उसका लण्ड टनटना गया. पिन्टू बोला, "एक एक करके, सब का एक साथ मत करो." मैने पुछा, "क्यो?" उसने कहा, "बाकि बैठ कर इंतिजार करेंगे?" मैने कहा, "नही लगेगा." मैने दोनो को

खड़े होने को कहा. दोनो मेरे पीछे पीछे आ गये और बिस्तर के पास मैने जांघे फैला दी और एक को चुत मे लण्ड डालने को कहा. उसने बिना वक्त गवाये मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया. दूसरा वापस जाने लगा तो मैने कहा, "तू कहां जा रहा है?" वो रूका और बोला, "तो मै क्या करूं?" मैने कहा, "गांड़ मे डालने मे प्राबल्म है क्या?" उसने आश्चर्य से मुझे देखा और पुछा, "क्या सच मे?" मैने सर हिला दिया तो वो जल्दी से मेरे पीछे आ कर मेरे गांड़ मे लण्ड घुसा दिया. दोनो वैसे ही खड़े थे जब मैने पीछे वाले के हाथ ला कर अपने स्तनो पर रख दिये और सामने वाले के हाथ अपने जांघो के निचे. मैने एक के कन्धे पर अपने हाथ जमा दिये और दोनो को बारी बारी से किस करने लगी. पिन्टू ने कहा, "क्या बात है? ये तो अलग ही स्टाईल है." अब मैने उन्हे नही बताया कि ऐसे एक बार मुझे मकरन और राजेश कर चुके है. मैने दोनो से कहा कि एक साथ डालना और एक साथ निकालना. दोनो समझ गये और मुझे धक्के लगाने लगे. लगातार धक्के लगाते लगाते दोनो एक ही समय कर मेरे दोनो छेद मे पानी छोड़ कर अलग हो गये. मै घुटनो के बल बैठ कर पिन्टू का लण्ड चुसने लगी और फिर उसके बाद अगले का. दोनो ने फिर मुझे उसी स्टाईल मे पकड़ लिया और धक्के लगाने लगे. ज्यादा देर नही लगा और दोनो ने पानी छोड़ दिया.

सब फिर सोफे पर बैठ गये और मै भी थक गई थी. मैने एक से पुछा, "और या बस." पिन्टू ने कहा, "बस अब ज्यादा हो जायेगा." मैने कुछ नही कहा और नहाने चली गई. नहा कर आई जब तक तीनो जा चुके थे बस पिन्टू ही था. मैने और उसके कपड़े पहने और पिन्टू मुझे घर छोड़ दिया. शाम को ६ बजे मै साईबर कैफे पहुंची तो दुष्यंत मुझसे कटा कटा सा फिर रहा था. मैने पिन्टू को बताया तो पिन्टू ने मुझे अपने कैबिन के बाथरूम मे जा कर नंगी रहने को कहा. मै बाथरूम मे जाकर कपड़े उतार दिये. दो मिनट बाद कमरे मे दुष्यंत आया और पिन्टू से बात करने लगा. पहले इधर उधर कि बाते होती रही फिर अचानक पिन्टू ने पुछा,"आज सुबह मोना कि जवानी देख कर कैसा लगा." उसने एक बार मे जवाब नही दिया तो पिन्टू ने फिर पुछा, "क्यो लण्ड नही खड़ा हुआ तेरा." उसने धीरे से कहा, "हुआ." पिन्टू ने कहा, "अगर बात हमारे बीच रहे तो तुझे भी ग्रुप मे शामिल कर सकता हूं, और फिर तू जितना चाहे मोना की जवानी से खेल सकता है. पाना चाहता है मोना को?" दुष्यंत ने फट से कहा, "क्यो नही, मै हर बात राज रखूंगा." उसने कहा, "जा बाथरूम मे मेरा सिग्रेट का पैकट है ले आ." दुष्यंत ने कहा, "मुझे लगा कि ये बोलोगे कि जा बाथरूम मे मोना है खेल ले उसके जिस्म से." उसने कुछ जवाब नही दिया और दुष्यंत बाथरूम मे आ गया.

दुष्यंत मुझे देख कर हक्का बक्का रह गया. न कुछ बोल रहा था न कुछ कर रहा था. मै घुटनो के बल बैठ गई और उसके पैट का जिप खोल कर उसका लण्ड बाहर निकाली और उसे चुसने लगी थोड़े देर मे उसका लण्ड टनटना गया और मैने खुद को दीवार से टिका लिया. वो मेर चुत मे लण्ड डाल कर धक्के लगाने लग और मै उसके हाथ अपने स्तनो पर रख कर उसे मसलने को उकसाने लगी साथ मे किस करने लगी. वो लगातार धक्के लगाता रहा और फिर पानी छोड़ कर पैंट ठीक करके बाहर चला गया. मै बाहर आने को हुई तो पिन्टू कि आवाज आई, वो संदीप से बात कर रहा था. उसने संदीप से कहा, "संदीप! जा बाथरूम मे तेरे लिए गिफ्ट रखा है." थोड़ी देर मे वो बाथरूम मे घुसा और मुझे नंगी खड़ी देख कर अचकचा गया. मैने उसका भी लण्ड पैंट से निकाला और थोड़ी देर चुसती रही और फिर उसे भी उसी तरह से खुद को हासिल करने के लिए बोली जैसे दुष्यंत ने किया था. वो निपट कर बाहर चला गया और मै नहा कर वापस आ गई.

फिर तो ये हफते मे दो बार होने लगा, मै जल्दी आ कर पिन्टू के रूम मे पिन्टू, दुष्यंत और संदीप को संतुष्ट करती और फिर अपने काम मे लग जाती, १५ दिन मे एक बार पिन्टू के घर का प्रोग्राम बनता पर इस बार उसके घर पर उसके तीनो दोस्तो के साथ साथ दुष्यंत और संदीप भी रहते. इन ६ लोगो के साथ असल मे मै एंजाय करती थी, बाकियो के साथ तो खाना पूर्ति थी बस.

थोड़े दिनो बाद पिन्टू ने मुझसे पुछा कि मै अपनी फर्माईश कर सकती हूं. मैने कहा, "मै जब जरूरत होगी बता दूंगी." उसने कहा कि ठीक है. सो एक दिन मौका आ गया. मै साईबर कैफे के बाहर खड़ी थी और मैने बहुत ही डीप गले का ब्लाऊज पहना था. शाम मे चार बज रहे थे और मै बाईक के सीट पर कोहनी टिका कर खड़ी थी. स्कूल छुटने का टाईम था और सब बच्चे घर जा रहे थे. अचानक मैने रोड के उस पार देखा तो तीन लड़के मुझे ही घूर रहे थे. मैने हल्का सा सर नीचे करके देखा तो पाया कि मेरे स्तन के ज्यादातर हिस्सा दिख रहा था और तीनो उसे ही देख रहे थे. पहले तो मुझे बहुत बुरा लगा पर फिर मुझे मजा भी आने लगा. मैने उनकी तरफ ध्यान ने देने का नाटक किया और वैसे ही खड़ी रही. लगभग ३० मिनट बाद पूरा रोड खाली हो गया और सिर्फ वो तीनो ही खड़े थे. मैने इधर उधर देखा और तीनो को पास आने का इशारा किया. तीनो हड़बड़ा गये पर धीरे धीरे चलते हुए मेरे पास आ गये. तीनो लड़के की हेल्थ अच्छी थी पर थे तो बच्चे ही. मैने उनसे सवाल पुछना शुरू किया. तीनो दसवी मे पढ़ते थे और स्कूल से ट्यूशन जा रहे थे फिर घर जाना था. ट्यूशन २ घन्टे का था जो ५ बजे से ७ बजे तक चलता. सबने अपने अपने नाम बताये और फिर मैने एक सवाल पुछा, "क्या देख रहे थे एक टक मेरे तरफ." तीनो हड़बड़ा गये और एक बार मे जवाब नही दे पाये. मैने तीनो को अंदर बुलाया तो तीनो

बहाने बनाने लगे. मैने जबरदस्ती की तब तीनो डरते डरते अंदर आये. मै तीनो को लेकर सबसे उपरी मंजिल मे ले गई. सब सोच रहे थे कि मै सजा दूंगी पर मेरे दिमाग मे तो कुछ और ही था. मैने तीनो को कुर्सीयो पर बिठाया और खुद भी बैठ गई. मै टेबल पर झुक गई और फिर सवाल पुछी. तीनो फिर से मेरे स्तनो के तरफ ही देखने लगे. मैने फिर सवाल किया तो एक डरते डरते बोला, "आंटी आपके दुध्धु बहुत मस्त दिखते है." मैने जानबूझ कर अपने स्तनो को देखा और फिर बोली, "अच्छा ये, पर ये तो कुछ भी नही दिख रहा." उसी ने आगे कहा, "इतना भी मस्त दिख रहा है आंटी." मै टेबल से उठी और मैने अपने ब्लाऊज के सारे बटन खोल दिये और उनके पटो को अलग कर दिया. ब्रा तो वैसे भी नही पहनती हूं जब कैफे आती हूं. मेरे स्तन उनके सामने थे और मैने कहा, "ऐसे ज्यादा अच्छे दिखते है." मैने मेरे दोनो तरफ के लड़को के लण्ड पैन्ट के उपर से पकड़ कर कहा, "पहले ये बताओ तुम लोगो का खड़ा भी होता है या नही."तीनो सकते मे आ गये पर थोड़े देर बाद सम्भले और मेरे स्तनो को देखने लगे. मैने कहा, "कभी आज से पहले किसी का देखे हो?" उन सब ने न मे सर हिलाया. मै खड़ी हो गई और मैने जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतार दी. उसके बाद मैने बीच का टेबल हटाया और वैसे ही बैठ गई. तीनो मेरे बदन को निहारे जा रहे थे और मै उन्हे ये मौका दे रही थी. अचानक एक ने मेरे निप्पल के तरफ इशारा करके बोला, "आंटी क्या मै इसे चुस सकता हूं?" मैने उसे इशारे से पास बुलाया और वो मेरे बगल मे घुटनो के बल बैठ गया और मेरे निप्पल चुसने लगा.दूसरे ने इशारा किया तो मैने उसे भी पास बुला लिया और वो भी घुटनो के बल बैठ कर मेरे निप्पल चूसने लगा. तीसरा खुद आकर घुटनो के बल मेरे सामने बैठ गया और मेरे पेट को चुमने लगा. मै अपने हाथो से दोनो को सर और पीठ सहला रही थी. तीसरे ने पेट को चुमते हुए अचानक मेरे चुत पर मुंह लगा दिया और मेरे चुत को चाटने लगा. उसने दोनो हाथो को मेरे जांघो पर लपेट लिया और किसी चाक्लेट के भांति मेरे चुत को चाटे जा रहा था. दूसरी तरफ दोनो मेरे निप्पल को दुधमुहे बच्चे की तरह चूस रहे थे और मेरे स्तनो को हलके हलके मसल और सहला रहे थे. तभी पिन्टू उपर आ गया. उसके मुझे इस हालत मे देखा और होठो के एक्शन से पुछा कि क्या हो रहा है. मैने उससे आंखो के इशारे से कहा कि डिस्टर्ब ने करे और वो मुस्कुरा कर नीचे चला गया. जो मेरे चुत को चाट रहा था उसने मेरे शरीर मे गर्मी भर दी थी और मेरा बदन ऐठने लगा. दोनो मेरे निप्पल चुसते चुसते मेरे गले को चुमते कभी नौसिखिया किस करते फिर निप्पल चुसने लगे जाते. मुझे सच पुछा जाये तो बहुत मजा आ रहा था. अचानक मेरे मुंह से आह निकली और मैने पानी छोड़ दिया. वो अभी भी मेरे पेट और कमर के आस पास चुमे जा रहा था. मैने उन सब को अलग किया और मै खुद खड़ी हो गई. मैने सब को कपड़े उतारने को कहा और सब फटाफट कपड़े उतार कर

खड़े हो गये. मैने सब का लण्ड देखा और सब काम चलाऊ लगे. मै बगल के रूम मे घुस गई और बिस्तर पर लेट गई. दो को अगल बगल मे लेटने को कहा और दो अगल बगल मे लेट कर मेरे स्तनो को थाम लिए और दोबारा निप्पल चुसने मे व्यस्त हो गये. तीसरा मेर चुत का छेद धूंध रहा था और अपना लण्ड घुसाने का असफल कोशिश कर रहा था. मैने उसका लण्ड पकड़ा और अपने हाथ से सही जगह पर रखा और फिर उसने धक्का लगाया. लण्ड अंदर घुस गया और वो आंखे बंद करके मेरे उपर लेट गया. मैने उसे प्यार से अपने बांहो मे लिया और उसके होंठो को चुम कर बोला, "बहुत मजा आ रहा है?" उसने हां कहा तो मैने उसे धक्के लगाने को कहा. वो धक्के लगाने लगा, नौसिखिया था सो ज्यादा देर रोक नही पाया और ढह गया. उसे मैने बगल मे लेटा लिया और अपना निप्पल उसके मुंह मे लगा दिया. उसके बाद दूसरे ने उसकी जगह ली. अगले १ घन्टे तक दो ने दो दो बार मेरे अंदर पानी छोड़ा और एक ने तीन बार. सात बज गये थे सो तीनो तैयार हो कर निकलने लगे. एक ने पुछा, "आंटी फिर कभी मौका मिलेगा?" मैने उनसे नम्बर ले लिया और कहा कि जब मौका होगा तब बुलाऊंगी. उसके बाद वो तीनो निकल गये और मै अपने काम मे लग गई.

उनके जाने के बाद पिन्टू आया और मुझसे पुछा कि ये क्या था. मैने उससे कहा कि मुझे भविष्य मे भी ऐसे ही मौके चाहिए. उसने कहा कि ठीक है वो देख लेगा. लगभग १५ दिनो बाद साईबर कैफे जल्दी बंद हो गया. १० बज रहे थे और मै पिन्टू के साथ कार मे घर जा रही थी. एक सुनसान रोड के किनारे कुछ लफूट लड़के अलाव जला कर बैठते थे. हम आगे निकल गये तो मेरे दिमाग मे एक ख्याल आया और मैने पिन्टू को कार मोड़ने को कहा, उसने मेरी बात मान ली. हम वापस आ गये और उन लड़को से काफी दूर एक अंधरे कोने मे कार खड़ी करवा दी. मै उतरने लगी तो पिन्टू ने कहा, "कहां?" मैने कहा, "उन लड़को के पास से आती हूं." पिन्टू ने कहा, "पागल हो गई हो क्या? वो लफंगे हैं, कुछ भी कर सकते है." मैने कहा, "यही तो मै चाहती हूं, बस थोड़ा मजा करके आती हूं. आप यही रूकना जब तक मै न आऊं." मैने आगे कहा, "आज मेरा रेप करवाने का मूड है, तो मै कितना भी चिल्लाऊं मत आईयेगा." उसने मुस्कुरा कर सर हिला दिया और चलते चलते उनके पास से गुजरी. फिर वापस पलटी और उनके पास से जा कर एक से बोली, "भैय्या रेलवे स्टेशन कितना दूर है." उसने रूखेपन से जवाब दिया, "१० कि.मी. है." मैने फिर पुछा, "कोई सवारी मिलेगी." उसने रूखेपन से कहा, "नही." तब तक बाकियो का ध्यान मेरे उपर आ गया था और सब मेरे बदन को निहार रहे थे. एक ने प्यार से पुछा, "कहां से आ रही हो आप?" मैने जवाब दिया, "जी एक फ्रेंड से मिलने आई थी, रिक्सा वाला यही उतार कर कही चला गया. बोला आगे नही जायेगा." उसने फिर पुछा, "कोई साथ मे नही है क्या?" मैने कहा,

"नही, अकेले हूं." सबकी आखे चमकने लगी और चेहरे पर मुस्कान आ गई. एक ने कहा, "अभी सवारी मिलना तो मुश्किल है." मैने कहा कि मुझे रास्ता बता दे मै पैदल चली जाऊंगी. दो लोग मेरे पास आ गये और मेरे पीछे खड़े हो गये. एक मेरे सामने खड़ा हो गया और दो लोग अभी भी अलाव के पास बैठे थे. जो सामने था उसने कहा, "मैडम आप जैसे खूबसूरत औरत को ऐसे रात मे पैदन नही जाना चाहिए, आप यही रूक जाईये, आपको सुबह हम लोग स्टेशन छोड़ देंगे." मैने कहा, "नही मै चली जाऊंगी." उसने कहा, "आप तो तक्कलुफ कर रही है." उसने मेरा हाथ पकड़ा और आग के पास खींचता हुआ बोला, "आईये हम आप को गर्मी देते है." मै हाथ छुड़ाते लगी तो एक ने मेरे पीछे से मेरे स्तनो को पकड़ लिया और उन्हे मसलने लगा. मै चिल्लाने लगी तो वो लोग मुझे उठा कर एक तरफ गद्दे पर पटक दिये. मै हाथ जोड़ने लगी, मिन्नते करने लगी. एक मेरे उपर आ गया और मेरे कमर पर हाथ रख कर मेरे साड़ी को पेटीकोट और पैन्टी समेत नीचे खीच लिया. मैने उठने की कोशिश की तो उसने मुझे धक्का दे दिया और मेरे ब्लाऊज के बटन तोड़ते हुए मेरे ब्लाऊज को फाड़ कर मेरे बदन से निकाल लिया. ब्रा तो अंदर था नही सो मै एकदम नंगी हो गई उन सब से सामने.

पांचो मेरे बदन से खेलना शुरू कर दिये. मै मिन्नते करती रही हाथ जोड़ती रही पर वो मेरे बदन से खेलते रहे. जब एक कपड़े उतार कर मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा रहा था तब मै कहा, "प्लीज मै शादी शुदा हूं." उसने कहा, "ये तो और भी अच्छा है कि तेरी चुत कोरी नही है. अरे रोज तो अपने मर्द से करवाती ही है, आज हमसे करवा ले." इतना बोल कर उसने मेरे चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया और मुझे धक्के लगाने लगा. बाकि मेरे बदन से खेलते रहे. वो लगातार धक्के लगाता रहा और मेरे चुत मे पानी छोड़ कर अलग हुआ. उसके अलग होते ही दूसरे ने उसकी जगह ले ली. फिर तो एक के बाद एक वो लोग मेरे चुत मे अपने लण्ड डालते रहे और एक समये के बाद पांचो निपट चुके थे. मै उठने लगी तो एक ने कहा, "कहां, लेटी रह." मै फिर लेट गई लगभग ५ मिनट के बाद एक ने कहा, "चल घोड़ी बन जा तेरी गांड़ मारेंगे." मैने हाथ जोड़ कर कहा, "नही उधर ने नही." उसने मुझे जबरदस्ती उठा कर घोड़ी बना दिया और मेरे चुत से पानी निकाल कर मेरे गांड़ को गीला किया और मेरे गांड़ मे अपना लण्ड घुसा दिया और धक्के लगाने लगा. दो मिनट के बाद उसने कहा, "तू तो ऐवेई ही बोल रही थी पहले भी तो गांड़ मरवा चुकी है." मैने कुछ नही कहा और वो मेरे गांड़ मे अपना पानी छोड़ने तक मुझे धक्के लगाता रहा और फिर अलग हो गया. उसके जाने के बाद दूसरे ने उसकी जगह ले ली. फिर दो एक एक करके सब ने मेरी गांड़ मारी. उसके बाद एक ने मुझे घुटनो के बल बैठाया और अपना लण्ड मेरे मुंह मे डाल दिया और चुसने को बोला. मै उसका लण्ड चुस रही थी जब दो मेरे बगल मे आ गये और अपने

लण्ड को मेरे हाथो मे पकड़ा दिया और मै दोनो के लण्ड हाथ से हिलाती रही. लगभग एक ही समय तीनो ने पानी छोड़ दिया. उसके बाद बाकि दोनो के लण्ड एक एक कर के चुसी. सब निपटने के बाद कपड़े पहने और निकल गये. मैने खुद को साफ किया और कपड़े पहन कर कार तक आई. पिन्टू ने मुझसे पुछा, "मजा आया?" मैने मुस्कुरा कर कहा, "बहुत." फिर वो मुझे घर छोड़ दिया.

उसके बाद महीने मे तीन चार बार ऐसे ही एंजाय करती हुं. कई बार अलग अलग परिस्थिती मे अंजाने लोगो को अपने चुत का मजा देती हूं. हां इस बात का ख्याल रखती हू. कि कोई बिमारी न हो जाये. एक दिन मैने सोचा कि अपनी जीवनी की कहानी लिखूं. ये खतम तो नही हुआ है क्योकि अभी मेरे जीवन मे और भी अनुभव होंगे पर अब तक की जीवनी हिन्दी मे लिखवानी थी तब पिन्टू ने मुझे सत्तार सिद्दिकी से मिलवाया. सत्तार एक कम्प्यूटर का अच्छा जानकार है और पिन्टू ने बताया कि थोड़ा मेन्टल है. मैने पुछा कि कैसे तो उसने बताया कि उसे अपनी बीवी को दूसरे से चुदवाते हुए देखना अच्छा लगता है. इस पक्ष की शुरूवात मे उसने अपनी बीवी को लेकर ट्रेन मे चढ़ा था. खुद का फर्जी आई कार्ड लेकर और बीवी के पास न पैसे छोड़ा था न कोई सबूत कि उसकी बीवी है. जब टी टी ने बिना टिकट के पकड़ा तो साफ नट गया कि उसकी बीवी है और टी टी उसकी बीवी को नीचे उतरने को बोलने लगा. फिर इसने खुद ही टी टी को स्जेशन दिया कि नीचे उतारने के बजाये इस औरत से सुहल कर के उसे खाली कम्पार्टमेट मे ले जा कर उसकी जवानी के मजे लूटो. टी टी को उसकी बात पसंद आई और वो ३ आर पी एफ जवान ने साथ उसकी बीवी को लेकर लगेज कम्पार्टमेन्ट मे चला गया. इसके लिए बुरा ये था कि वो चारो इसे नही ले गये. उन चारो ने पूरे सफर मे जम कर इसकी बीवी के जवानी को लूटा और मोबाईल से रिकार्डींग करके खुद भी रखे और उसकी बीवी को भी एक कापी दे दिया. खैर अपने कहानी पर आते है. मुझे उससे मिलवया गया और मैने उसे अपनी बात बताई. वो कहानी लिखने को तैयार हो गया पर उसकी एक शर्त थी कि हर दो पन्नो के बाद मुझे उसे अपनी चुत का मजा देना होगा. कहानी लिखते समय बिना कपड़ो के उसके सामने बैठुंगी और हर रोज मुझे उसका लण्ड चुस कर उसका पानी निकालना पड़ेगा. मुझे कोई दिक्कत नही थी. मै तैयार हो गई और जो हिस्सा उससे नही लिखवाना था वो दुष्यंत ने मेरे लिए लिखा है.

मेरी कहानी आगे भी जारी रहेगी. और भी कई वाक्ये रहे जो मैने इसमे नही लिखा है वो अगले कड़ी मे लिखुंगी. अभी इसे आप मेरे जीवन का मोटा मोटा सारांश समझ सकते है.

मोनिका सिन्हा